15 रूपये

वर्ष 14 अंक 01
01 सितम्बर 2013

जोगी : तारणहार या विध्वंसक

जगत विज़न

नरोत्तम या नराधम!

मध्यप्रदेश के मंत्री पर यौन शोषण, भ्रष्टाचार, जालसाजी फिरौती-अपहरण हत्याओं का कलंक

RNI NO. MPBIL/2001/5256 Postal Registration No. L2/भा.सं/581/2012-2014

Visit at : www.jagatvision.com

प्रेरणा स्त्रोत : स्व. श्री जगत पाठक

संपादक	विजया पाठक
कार्यकारी संपादक	समता पाठक
संयुक्त सम्पादक	प्रियंका पाठक
सह संपादक	अर्चना शर्मा
छत्तीसगढ़ सर्किल हेड	ओंकारनाथ तिवारी
छत्तीसगढ़ ब्यूरो	विद्याशंकर शुक्ल
छत्तीसगढ़ संवाददाता	आनन्द शर्मा, राजेश सक्सेना, आनन्द मोहन श्रीवास्तव,
गोवा ब्यूरो चीफ	अजय सिंह
गुजरात ब्यूरो चीफ	गौरव सेठी
दिल्ली ब्यूरो चीफ	अरूण हरदेनियां
उत्तरप्रदेश ब्यूरो चीफ	वेद कुमार मौर्य
बुंदेलखण्ड संवाददाता	रफत खान
विधिक सलाहकार	एडवोकेट मनोज जैन
कम्पोजिंग एण्ड डिजाईनिंग	जीवन सिंह

सम्पादकीय एवं विज्ञापन कार्यालय

भोपाल

एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल
मो. 98260-64596, मो. 9893014600
फोन : 0755-4299165 म.प्र. स्वत्वाधिकारी,

छत्तीसगढ़

4-विनायका विहार, रिंग रोड, रायपुर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,

विजया पाठक द्वारा समता ग्राफिक्स एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र. द्वारा कम्पोज एवं जगत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स प्लाट नं. 28 सुरभि विहार बीडीए रोड भेल भोपाल से मुद्रित एवं एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित संपादक विजया पाठक। समस्त विवादों का कार्यक्षेत्र भोपाल सत्र-न्यायालय रहेगा।

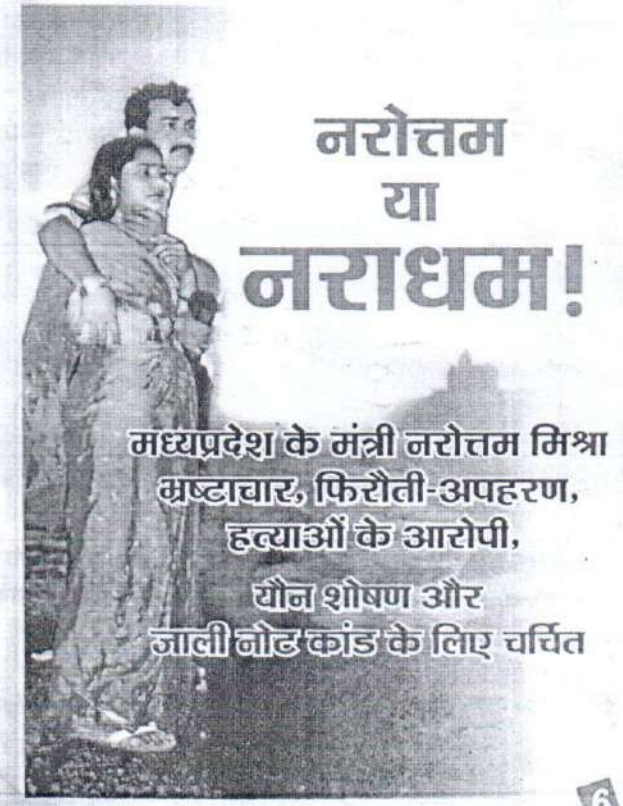

E-mail : jagat.vision@gmail.com
Website: www.jagatvision.com

मासिक द्विभाषी पत्रिका   वर्ष 14   अंक 01   01 सितम्बर 2013

6

जोगी: तारणहार या विध्वंसक 28
मोदी बनाम मुलायम और मुसलमान 32
एक प्रगतिशील आवाज की हत्या 35
कानून-व्यवस्था की सुदृढ़ता के प्रयासों को समर्पित रहे 9 वर्ष 36
मानसिकता बदले तो रूकेगी महिला हिंसा 40
स्मृति शेष 43
अपनों की कलह में महामानव 44
संशोधित विवाह-कानून क्या स्त्री को सशक्त बनायेगा 46
डिजिटल ड्रेगन का बढ़ता जाल 49
पसरने लगे नए बसेरे 52
गोरखा चुनौती, ममता की अग्निपरीक्षा 54
देवभूमि में अस्पृश्यता 57
एवरेस्ट पर सैलानियों का रेला 58
HIMALAYAN BLUNDERS 62
GOLD INVESTMENTS VARIED OPTIONS 64
POLITICS OVER DEATH 65

विजया पाठक

नरोत्तम या नराधम!

मध्यप्रदेश के मंत्री नरोत्तम मिश्रा भ्रष्टाचार, फिरौती-अपहरण, हत्याओं के आरोपी, यौन शोषण और जाली नोट कांड के लिए चर्चित

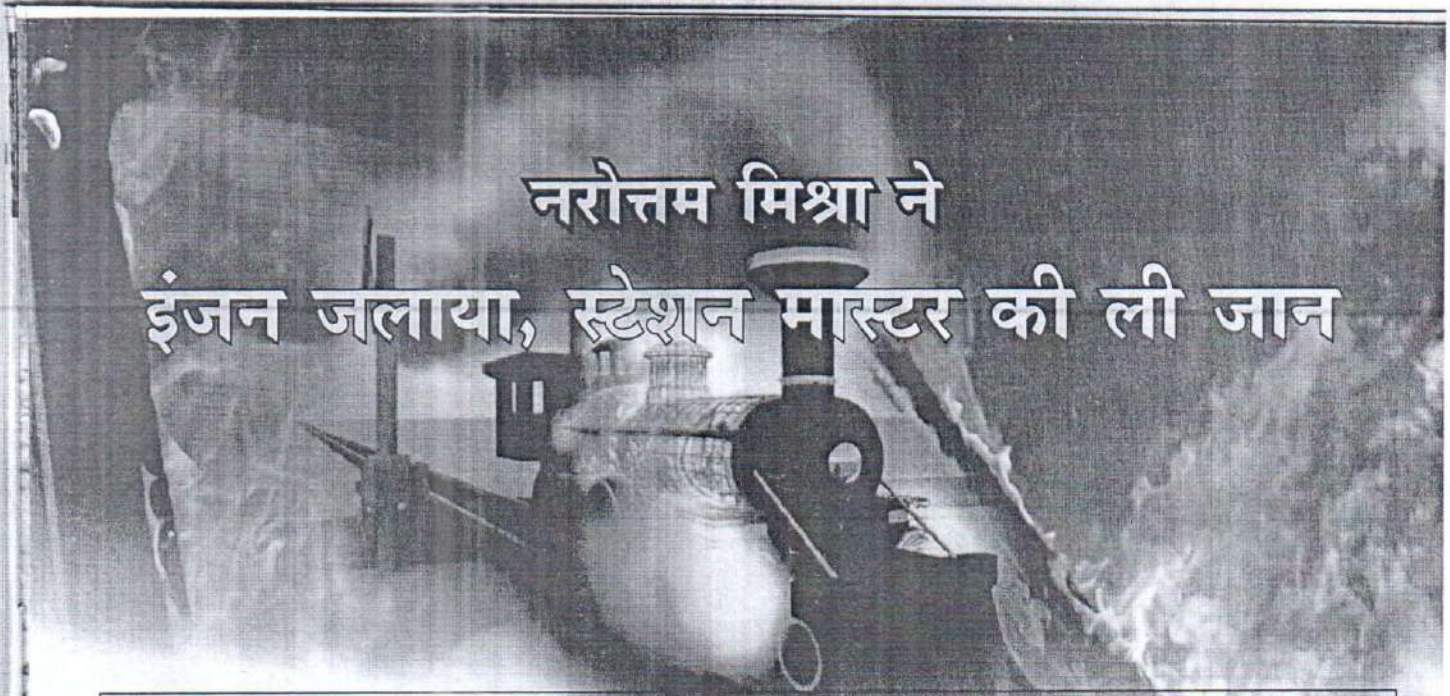

नरोत्तम मिश्रा ने इंजन जलाया, स्टेशन मास्टर की ली जान

नरोत्तम मिश्रा का घृणित, अमानुषिक और पाश्विक आपराधिक कारनामों का एक लम्बा इतिहास रहा है, लेकिन अपराधियों से गहरी गठजोड़ रखने वाला यह शख्स अपने राजनीतिक रसूख, प्रशासनिक तंत्र पर प्रभाव और तिकड़मों के बल पर हमेशा बचता आया है। इन्हीं आपराधिक कारनामों में नरोत्तम मिश्रा का नाम अपने दोनों भाइयों-श्रीमन मिश्रा और आनंद मिश्रा के साथ भी दर्ज है जिन्होंने साथियों के साथ मिलकर डबरा में कुतुब एक्सप्रेस का इंजन जलाया था और जीआरपी थाने में दर्ज रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही किए जाने पर एक कुख्यात बदमाश जीता पंजाबी के हाथों तत्कालीन स्टेशन मास्टर राजबहादुर शुक्ला की नृशंस हत्या करवा दी थी। षड्यंत्र का भेद नहीं खुल पाए, इसके लिए बाद में जीता पंजाबी का फर्जी एनकाउंटर करवाकर उसे पुलिस के हाथों मरवा दिया, ताकि स्टेशन मास्टर की हत्या का राज कभी नहीं खुल पाए। नरोत्तम मिश्रा द्वारा अंजाम दिए गए इस सनसनीखेज घटनाक्रम की शुरुआत तब हुई जब अयोध्या में बाबरी मस्जिद टूटने की घटना के बाद एक बड़े नेता को बिहार में गिरफ्तार कर लिया गया। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू यादव की शह पर की गई इस गिरफ्तारी का विरोध करते हुए नरोत्तम मिश्रा अपने दोनों भाइयों-श्रीमन और आनंद मिश्रा सहित समर्थकों के साथ डबरा रेलवे स्टेशन पर आए और इन सब ने मिलकर स्टेशन पर खड़ी कुतुब एक्सप्रेस का इंजन जला दिया। इंजन जलाने के इस मामले में जीआरपी थाने में प्रकरण दर्ज हुआ और गवाह थे तत्कालीन स्टेशन मास्टर राजबहादुर शुक्ला, जिन्होंने इंजन जलाने का सारा घटनाक्रम अपनी आंखों से देखा था। मामला पूरी तरह नरोत्तम मिश्रा और उनके भाइयों के खिलाफ बनता नजर आ रहा था, जिससे डरकर नरोत्तम ने स्टेशन मास्टर श्री शुक्ला पर दबाव डाला कि वह उनके विरुद्ध बयान नहीं दें, वर्ना गंभीर परिणाम भुगतना पड़ेगा, लेकिन वे नहीं माने, उन्होंने साफ शब्दों में कह दिया कि सारा घटनाक्रम मैं विभागीय डायरी में दर्ज कर चुका हूँ, इसलिए बयान नहीं बदल सकता। स्टेशन मास्टर को धौंस में नहीं आता देख नरोत्तम मिश्रा ने खूनी खेल खेला और दुर्दांत अपराधी जीता पंजाबी के हाथों राजबहादुर शुक्ला की नृशंस हत्या करवा दी और इसके बाद अपने घिनौने षड्यंत्र का एक और पन्ना खोलते हुए नरोत्तम मिश्रा ने तत्कालीन टीआई के हाथों जीता पंजाबी को फर्जी एनकाउंटर में मरवा दिया। इससे यह राज हमेशा-हमेशा के लिए रहस्यों में दफन हो गया कि एक के बाद एक दो हत्याओं के पीछे किसी और की नहीं, नरोत्तम मिश्रा की ही साजिश थी। यही नहीं, बाद में नरोत्तम मिश्रा के दबाव में कुतुब एक्सप्रेस का इंजन जलाने का प्रकरण भी दबा दिया गया, जिसमें नरोत्तम मिश्रा की साजिश और स्टेशन मास्टर तथा कुख्यात बदमाश जीता पंजाबी की हत्याओं का राज खुल सकता था। सम्पूर्ण प्रकरण की सीबीआई द्वारा जाँच हो तो नरोत्तम मिश्रा का दागदार चेहरा अब भी सामने आ सकता है।

मध्य प्रदेश सरकार में लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,संसदीय कार्य, विधि और विधायी कार्य जैसे महत्वपूर्ण महकमे संभालने वाले मंत्री, डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने अपने अब तक के राजनीतिक जीवन में जो नृशंस, जघन्य, आततायी, भ्रष्ट और निर्मम कारनामे कर दिखाए हैं, उनसे यह प्रश्न सहज ही कौंधता है कि अपने नाम से नरों में उत्तम कहलाने वाला यह शख्स किसी नराधम से क्या कम है? करोड़ों-करोड़ रुपए के घपले-घोटालों और भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे मध्यप्रदेश मंत्रिमण्डल के इस कद्दावर मंत्री ने अपराधी गिरोहों से सांठ-गांठ करके डबरा और दतिया में फिरौती-अपहरण और ब्लैकमेलिंग का जो काला कारोबार फैला रखा है, उसके चलते समूचे क्षेत्र में भय और आतंक का वातावरण पसरा पड़ा है। अनेक हत्याकांडों में सरगना के रूप में चर्चित

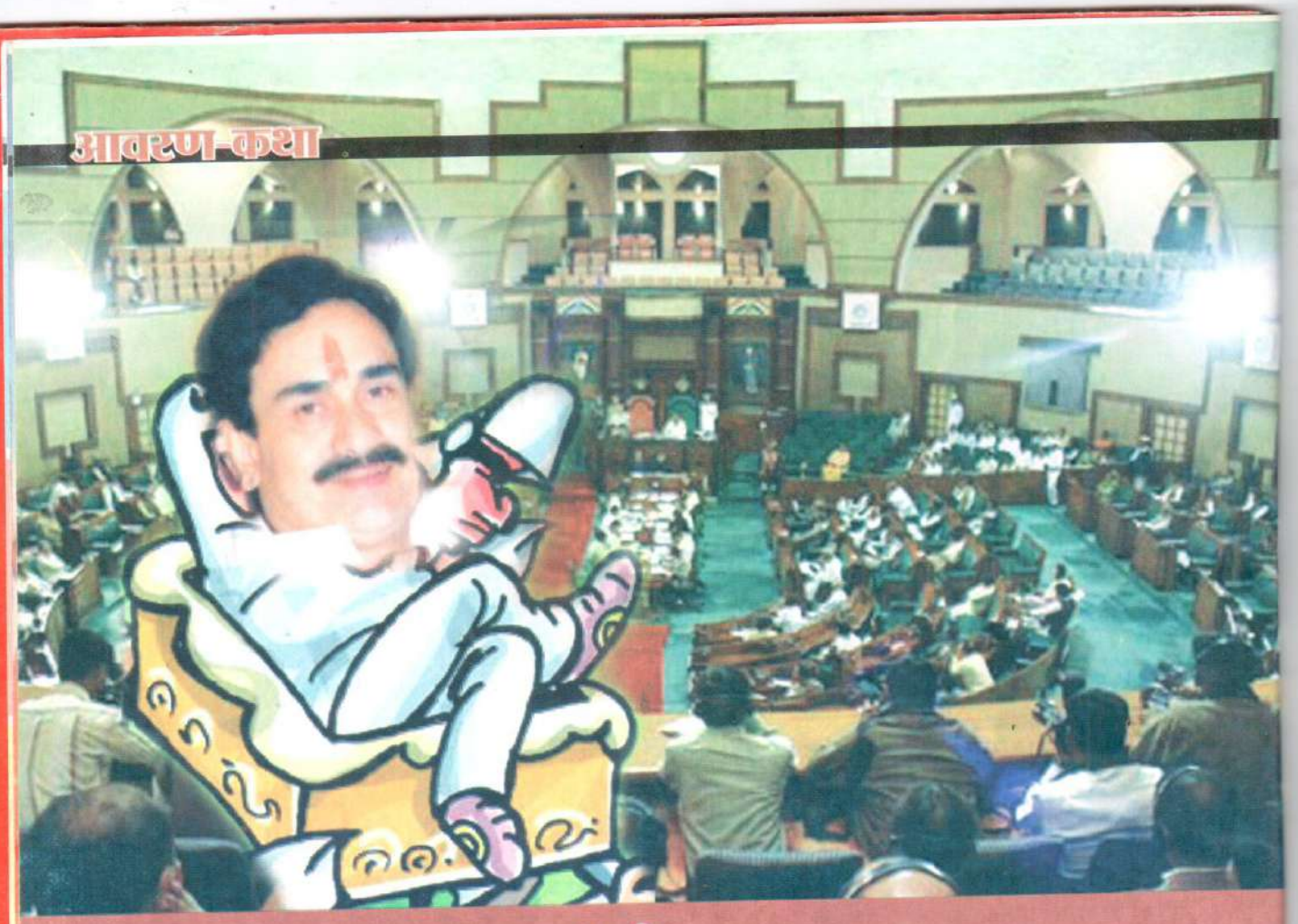

सदन-आसंदी का अपमान

मध्यप्रदेश मंत्रिमण्डल में कद्दावर हैसियत रखनेवाले और स्वास्थ्य, विधि-विधायी तथा संसदीय कार्य विभागों का जिम्मा संभालने वाले नरोत्तम कितने अभद्र, अशालीन और संस्कार-विहीन हैं, इसका नजारा विधानसभा में उनके अपनी कुर्सी पर बैठने के अंदाज से पता चलता है। सदन तथा आसंदी पर विराजमान अध्यक्ष की गरिमा और सम्मान की तनिक भी चिंता नहीं करते हुए नरोत्तम मिश्रा अपनी सीट पर पांव फैलाकर यूं बैठते हैं, मानो विधायी सदन की कार्यवाही में भाग लेने नहीं बल्कि राजा-महाराजाओं की तरह आराम फरमाने के लिए सदन में आए हों। उनके अपनी कुर्सी पर इस तरह बैठने से सदन और सभापति की आसंदी का घोर अपमान होता है लेकिन नरोत्तम मिश्रा को इसकी क्या परवाह, आपराधिक प्रवृत्ति के इस अनैतिक, दुराचारी और भ्रष्ट व्यक्ति से संसदीय परंपराओं के सम्मान और संस्कारों की उम्मीद भला कैसे की जा सकती है?

नरोत्तम मिश्रा के दागदार राजनीतिक जीवन में यौन शोषण की कई कुत्सित घटनाएं दर्ज हैं वहीं जाली नोट चलाने जैसे राष्ट्रविरोधी कार्यों में भी घोर आपराधिक छवि के इस कथित राजनेता की संलिप्तता सामने आ चुकी है। भ्रष्टाचार में माहिर, आपराधिक छवि के नरोत्तम मिश्रा ने अपने भाईयों, रिश्तेदारों और कृपापात्र अपराधियों के दम पर संपत्तियों पर जबरिया कब्जे की अनेक घटनाओं को भी अंजाम दिया है और दतिया क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी की छवि को इस कदर कलंकित कर दिया है कि यदि आने वाले विधानसभा चुनावों में इन्हें पार्टी के टिकट पर फिर चुनाव मैदान में उतारा जाता है तो पार्टी की हार सुनिश्चित है। आयकर

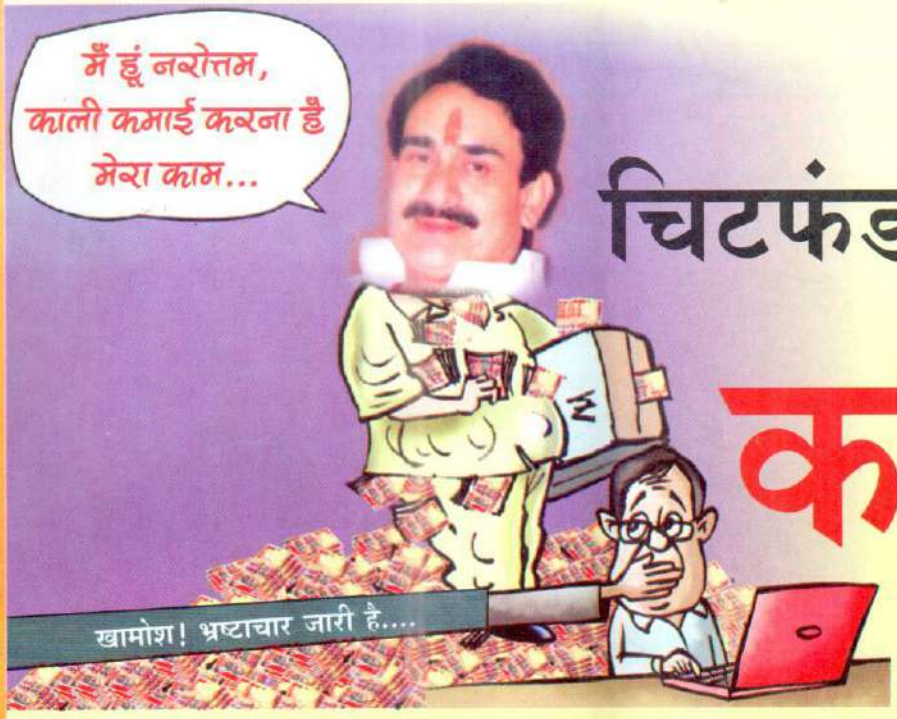

चिटफंड में कमाए करोड़ों

काली कमाई करने की हवस में नरोत्तम मिश्रा ने शायद ही कोई आपराधिक हथकंडा छोड़ा हो। श्री मिश्रा पर दो चिटफंड कम्पनियों का अवैध और गुपचुप ढंग से संचालन किए जाने और इन फर्जी कम्पनियों की मार्फत गरीब जनता से करोड़ों-करोड़ रुपए की ठगी किए जाने के पुष्ट आरोप हैं, लेकिन बचने में माहिर नरोत्तम मिश्रा का इस मामले में भी बाल-बांका नहीं हो पाया। इन दो कम्पनियों के नाम हैं सुरभि और केएमजे, जिनके द्वारा क्षेत्र के लोगों से 100 करोड़ से भी ज्यादा की धोखाधड़ी की गई है। केएमजे कम्पनी ने नरोत्तम मिश्रा के कहने पर ही उनका तथा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का चांदी के मुकुट पहनाकर अभिनंदन किया था। केएमजे कम्पनी के डबरा, दतिया, शिवपुरी, ग्वालियर आदि शहरों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में नरोत्तम मिश्रा अपनी सक्रिय उपस्थिति लगातार दर्ज कराते रहते थे।

बाद में जब दोनों चिटफंड कम्पनियों का काला सच सामने आया, लोग यह जानकर हैरान रह गए कि उन्हीं का मंत्री नरोत्तम मिश्रा, चिटफंड कम्पनियों का सर्वेसर्वा बनकर अपने मतदाताओं को लूटने तक से नहीं चूक रहा है।

दोनों कम्पनियों-सुरभि तथा केएमजे की करतूतों का काला चिट्ठा खुल चुका है और हाईकोर्ट दोनों को डिफाल्टर घोषित करके यह निर्देश दे चुका है कि दोनों कम्पनियों से जप्त पैसा खातेदारों को वापस कर दिया जाए, लेकिन इस आदेश पर आंशिक अमल होता भी नहीं दिख रहा है। इसके पीछे भी नरोत्तम मिश्रा द्वारा दबाव डाला जाना प्रमुख कारण है, क्योंकि दोनों ही कम्पनियों के माध्यम से इन्होंने करोड़ों-करोड़ रुपए कमाए हैं।

छापों में पन्द्रह करोड़ की आयकर चोरी और फर्जीवाड़े का दोषी पाए गए नरोत्तम मिश्रा की राजनीतिक छवि इस कदर बिगड़ चुकी है कि सभ्य मतदाता इनके नाम तक से नफरत करने लगे हैं। इसके चलते राजनीतिक क्षेत्रों में यह सुनिश्चित माना जा रहा है कि भाजपा ने अगर नरोत्तम को दोबारा दतिया विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी बनाया तो यह कदम पार्टी के लिए आत्मघाती सिद्ध होगा।

मध्यप्रदेश सरकार में कद्दावर हैसियत रखने वाले डॉ. नरोत्तम मिश्रा का दागदार राजनीतिक जीवन ऐसी एक नहीं, दर्जनों घटनाओं और कारनामों से जुड़ा है, जिनकी तुलना किसी दुर्दांत अपराधी के इतिहास से ही की जा सकती है। फाकाकशी की हालत से जूझने को मजबूर, एक बेहद गरीब ब्राम्हण परिवार के इस शख्स ने घृणित अपराधों, षड्यंत्रों, हत्याकांडों और फिरौती-अपहरण जैसी वारदातों के बूते अपना

वर्दी को कर रहे हैं दागदार

अपराधियों के सरगना के रूप में कुख्यात नरोत्तम मिश्रा पुलिस की वर्दी को दागदार करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। धौंस-धपट, विभागीय कार्यवाहियों में फंसाने की धमकी देकर और अपराधी गिरोहों से सांठ-गांठ करने में माहिर नरोत्तम के इन कानून विरोधी कामों के चलते ही भ्रष्ट पुलिस अफसरों और अपराधियों का एक गठजोड़ बन गया है जो नरोत्तम मिश्रा के इशारे पर काम करते हुए फिरौती, अपहरण, सुपारी देकर हत्या करवाने, फर्जी एनकाउंटर करके लोगों को मरवाने जैसे आपराधिक कृत्यों को धड़ल्ले से अंजाम दे रहा है। पुलिस अफसरों और अपराधियों के इसी गठजोड़ का उदाहरण पिछले साल मार्च में तब सामने आया था जब 27 मार्च को दतिया में व्यापारी दीपक सचदेवा का अज्ञात बदमाशों द्वारा अपहरण कर लिया गया। जिस वाहन से दीपक सचदेवा को अगवा किया गया था, उसमें पीली बत्ती लगी थी और आरोपियों में से एक के पास वायरलेस सेट भी था। इससे साफ जाहिर हुआ कि अपहरण में शामिल लोगों में कोई पुलिस का आदमी भी था। इसके कुछ ही माह बाद आठ अगस्त को अज्ञात बदमाश सर्राफा व्यापारी राजेन्द्र अग्रवाल को हथियारों की नोंक पर अपहरण करके ले गए। वारदात के बाद पुलिस ने जो वाहन जब्त किया वह चोरी का था और इसे जिले में पदस्थ एक थाना प्रभारी द्वारा महीनों तक इस्तेमाल किया जा चुका था। उत्तर प्रदेश के दिव्यापुर से चोरी यह वाहन पुलिस अधिकारी द्वारा महीनों इस्तेमाल करने और अपहरण में इसी वाहन का इस्तेमाल किए जाने से यह बात खुलकर सामने आई कि फिरौती-अपहरण के काले धंधे में लगे अपराधियों का पुलिस अधिकारी खुलकर साथ दे रहे हैं। इस घटना की गूंज अभी थमी भी नहीं थी कि 25 अगस्त 2012 को एक सनसनीखेज खुलासा हुआ जब ग्वालियर एसटीएफ ने शातिर बदमाश समीर जाट और उसके साथी को एक संयुक्त एनकाउंटर में पकड़ा। मोस्टवांटेड समीर जाट के पास से जो स्कोर्पियो गाड़ी मिली, वह वही गाड़ी थी, जिसका इस्तेमाल बसई के थाना प्रभारी धनेन्द्र सिंह भदौरिया महीनों से कर रहे थे। इससे जहां दतिया में एक के बाद एक फिरौती और अपहरण की घटनाओं के पीछे अपराधियों और पुलिस के गठजोड़ का कारनामा सामने आया वहीं यह भी सिद्ध हुआ कि अपराधियों और पुलिस के इस गठजोड़ को स्वयंभू बाहुबलि नरोत्तम मिश्रा का संरक्षण प्राप्त है। कुख्यात अपराधी समीर जाट के पास से बरामद स्कार्पियो गाड़ी का बसई थाने के जो तत्कालीन प्रभारी धनेन्द्र सिंह भदौरिया उपयोग कर रहे थे, वे नरोत्तम मिश्रा के सबसे बड़े कृपापात्रों में बताए जाते हैं। नरोत्तम मिश्रा राजनीतिक वजूद बनाया है और चंद सालों में ही खुद को धनकुबेरों की श्रेणी में पहुंचा दिया है। अत्यंत ही जर्जर एवं दयनीय आर्थिक स्थिति से शुरूआत करने वाले नरोत्तम मिश्रा ने नेता के वेश में आपराधिक सरगना की तरह काम करते हुए जो अतुल धन-सम्पदा अर्जित की है, वह देश के बड़े से बड़े भ्रष्टाचारी का सिर झुकाने के लिए पर्याप्त है। केवल घोषित सम्पत्ति की बात करें तो नरोत्तम के बैंक खातों में जहां लाखों रुपए की रकम होने का पता चलता है वहीं दर्जनों तोला सोना, बेशुमार जमीनों और

और उनके बीच कितना अनुराग है, यह बात इसी से जाहिर है कि नरोत्तम मिश्रा के जन्मदिन पर धनेन्द्र सिंह भदौरिया द्वारा अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन छपवाकर उन्हें शुभकामनाएं दी जाती हैं, जबकि पुलिस जैसे जिम्मेदार और निष्ठावान महकमे में पदस्थ थाना प्रभारी द्वारा ऐसा किया जाना सिविल सेवा अधिनियम और आचरण नियमों का सरासर उल्लंघन है। नरोत्तम मिश्रा, फिरौती और अपहरण में लगे कुख्यात अपराधियों और पुलिस अफसरों के बीच के गठजोड़ का खुलासा तब और मजबूत सबूत के साथ सामने आया जब बसई के तत्कालीन थाना प्रभारी धनेन्द्र सिंह को निलंबित करके उनके खिलाफ एडीशनल एसपी आरएस प्रजापति द्वारा जांच शुरू की गई। उस दौरान एक ऐसी सनसनीखेज आडियो सीडी का खुलासा हुआ जिसमें धनेन्द्र सिंह भदौरिया किसी पुलिस अधिकारी से बात कर रहा था। बातचीत की इस रिकार्डिंग में धनेन्द्र सिंह भदौरिया ने एसपी को भद्दी-भद्दी गालियां बकीं और बार-बार यह जताया कि मंत्री नरोत्तम मिश्रा उसके बेहद करीबी हैं। इस सीडी में धनेन्द्र सिंह भदौरिया ने मंत्री से फोन करवाने, मनमर्जी लेटर और नोटशीट लिखवाने जैसी बातें कहीं, जिनसे साफ जाहिर होता है कि धनेन्द्र सिंह भदौरिया जैसे भ्रष्ट, नमकहराम पुलिस अधिकारियों और अपराधियों के गठजोड़ को मंत्री नरोत्तम मिश्रा का पूरा संरक्षण है और दतिया, डबरा, ग्वालियर इलाके में चल रहे फिरौती-अपहरण के धंधे में उनकी बड़ी हिस्सेदारी है। यहां बता दें कि नरोत्तम मिश्रा की सिर्फ धनेन्द्र सिंह भदौरिया की मार्फत अपराधियों से सांठ-गांठ नहीं है, इलाके के तमाम छोटे-बड़े पुलिस अफसरों को नरोत्तम मिश्रा के इशारे पर ही चलना पड़ता है। नरोत्तम मिश्रा का कहा नहीं मानने की सजा पुलिस कर्मियों को निलंबन, बर्खास्तगी, विभागीय जांच, स्थानांतरण, पदावनति जैसे नतीजों के रूप में भुगतनी पड़ती है। यही कारण है कि जब भी नरोत्तम मिश्रा का जन्मदिन आता है, नेताओं, कारोबारियों की तर्ज पर पुलिस अफसरों में भी उन्हें बधाई देने के लिए अखबारों में विज्ञापन छपवाने की होड़ लगी रहती है। थाना प्रभारी गोराघाट राजकुमार शर्मा, थाना प्रभारी चिरुला एसएल भागोरिया जैसे पुलिस अफसरों द्वारा अखबारों में छपवाए गए बड़े-बड़े बधाई विज्ञापन इस बात की तस्दीक करते हैं।

बसई थाने के पूर्व प्रभारी धनेन्द्र सिंह भदौरिया द्वारा नरोत्तम मिश्रा के जन्मदिन पर छपवाया गया विज्ञापन

भवनों का मालिक भी यही हैं। लेकिन यह तो सरकारी कागजों में दर्ज जानकारियां हैं, सच्चाई यह है कि छल-प्रपंचों, षड्यंत्रों, आपराधिक कारनामों, धपले-घोटालों और आतंक के बूते नरोत्तम मिश्रा ने अब तक जितनी काली कमाई की है, उसका मूल्य अरबों-अरब में आंका जा सकता है। ट्राली, ट्रक-डम्परों से अवैध वसूली, फिरौती-अपहरण, जबरन कब्जे से लेकर मंत्री पद का दुरुपयोग करते हुए नरोत्तम मिश्रा ने जीभर के धन उलीचा है और अपने साथ-साथ नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों तथा काले

गोराघाट के थाना प्रभारी राजकुमार शर्मा ने नरोत्तम मिश्रा के जन्मदिन पर यह विज्ञापन छपवाया था।

to be received. Therafter installment of receipt is given – 2.44 + 4.83 + 1.99 + 3 = 12.26 Crore. Further distribution of these money is given:-

Neta (Means Minister) = 9+1+0.50+0.10 = 10.60+0.40 +4.00=15.00 Crore
Jadon the EE gets 50 (50 Lacs), Mayor gets 50 (50 Lacs), Commissioner (Nagar Nigam Commissioner gets 33 Lacs) this page is also liked to LPS 25 Page 122.

figure, are generally similar amounts and are in certain specific dates. The details payments out of this bank account are –

Sl. No.	Date	Recipient concerns	Amount (Rs)	Vide Cheque No.
01	07.03.08	Tirupati Traders	5141064.00	636320
02.	07.03.08	Vinit Enterprises	5141064.00	636319
03.	10.03.08	R. R. Enterprises	5141064.00	636339
04.	10.03.08	R. P. Traders	5141064.00	636338
05.	28.03.08	Sumeet Enterprises	7909360.00	636352
06.	28.03.08	R. R. Enterprises	7909360.00	636355
07.	28.03.08	R. P. Traders	7909360.00	636354
08.	28.03.08	Tirupati Traders	7909360.00	636353
09.	28.03.08	Omsai Enterprises	9181284.00	636356
10.	28.03.08	Ashok Agency	9181284.00	636357
11.	17.04.08	Ashok Agency	6777500.00	730106
12.	17.04.08	Omsai Enterprises	6777500.00	730105
13	17.04.08	Tirupati Traders	2900000.00	730102
14	17.04.08	Sumeet Enterprises	2900000.00	730101
15	17.04.08	R. P. Traders	2900000.00	730103
16	17.04.08	R. R. Enterprises	2900000.00	730104
		Total	95719264.00	

रतनपुर लैंड डील में शामिल 16 कंपनियां जिनमें से 14 बोगस थीं।

कारनामों में साथ देने वाले अपराधियों को भी मनमर्जी लूट करने की छूट दी है। जनता को लूटने वाली चिटफंड कम्पनियों को चलाने का सनसनीखेज कारनामा भी नरोत्तम ने अंजाम दिया है, जिनके जरिए भोली-भाली जनता से करोड़ों की धोखाधड़ी की गई। डबरा शुगर फैक्ट्री के लिए ग्वालियर स्टेट द्वारा आवंटित भूमि पर अपने बड़े भाई डॉ. श्रीमन मिश्रा को आगे करके नरोत्तम मिश्रा ने जो अवैध कब्जा जमाया, उस पर डॉ. श्रीमन मिश्रा द्वारा करोड़ों रुपए की लागत से बना नर्सिंग होम संचालित किया जा रहा है। अपने बड़े भाई डॉ. श्रीमन मिश्रा के दामाद, कुख्यात अपराधी बंटी गौतम सहित राजेन्द्र सिंह परमार, कौशल शर्मा, गुड्डू शर्मा को संरक्षण देकर नरोत्तम मिश्रा ने जो करोड़ों रुपए मूल्य के अवैध मकान और प्रतिष्ठान स्थापित किए हैं, उनकी गणना गंभीर भ्रष्टाचार के रूप में की जाती है।

भ्रष्टाचारियों के शहंशाह माने जाने वाले डॉ.

Nagarjuna Construction company. Various tranche of receipt of the commission are mentioned in the slip pads.

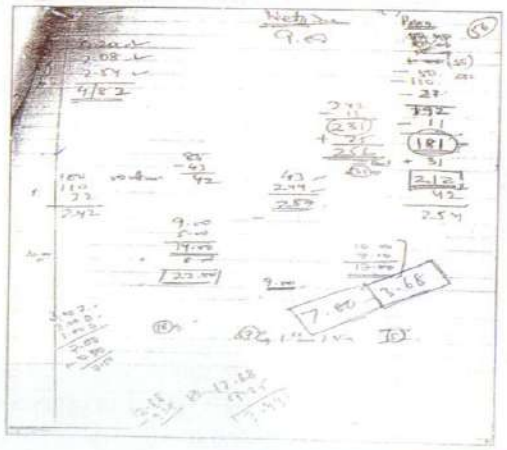

Sim 12.685 9.50 3.80
2+3+2.10 = 7.10+2.15 = 9.25 44.00 ,44.00
267x7.25 / 19.35-9.26=10.09

NAG= 19.35
2.44, 4.83, 1.99= 9.26+3.00=12.26
Neta-
9.00+1.00+0.50+0.10=10.60+0.40+4.00=15.00
50.00 jadon
50.00 Mayor
12.26, 7.00
50 jadon
33 Commissioner
These entries pertain to order awarded to Simplex solution (SIM) & Nagarjuna Construction Company (Nag).

रसीदें, जिनसे कमीशन के खेल का खुलासा हुआ

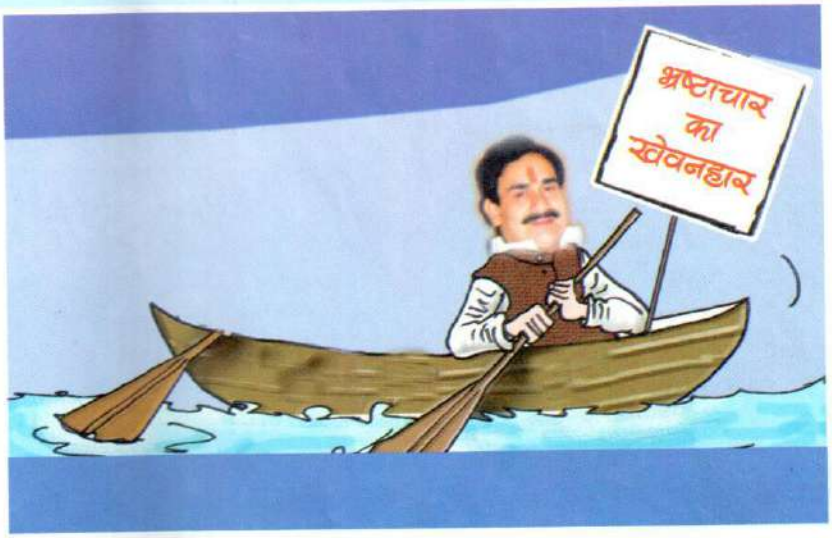

नरोत्तम मिश्रा ने जो अकूत संपत्ति और धन कमाया है वह इस मायने में अभूतपूर्व है कि गांव छोड़कर जब उनका परिवार डबरा में रहने आया था, तब इनकी आर्थिक स्थिति इतनी बदतर थी कि फूटी कौड़ी के लिए भी तरसना पड़ता था। नरोत्तम मिश्रा के पिता शिवदत्त मिश्रा को डबरा में दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने शरण दी थी, जिनके मकान में नरोत्तम परिवार एक गरीब किराएदार के रूप में रहते हुए जैसे-तैसे रोजी-रोटी कमाने की हालत में था, लेकिन शातिर नरोत्तम मिश्रा ने ऐसा जाल बिछाया कि अग्रवाल परिवार उसमें फंसकर रह गया। नेतागिरी की दम पर नरोत्तम मिश्रा ने पहले मकान पर कब्जा जमाया, फिर षड्यंत्र करके मकान की रजिस्ट्री अपने नाम करवा ली। इस धोखेबाजी से दुर्गाप्रसाद अग्रवाल के दिल में इस कदर गम बैठा कि वे ज्यादा दिन जी नहीं सके। भ्रष्टाचारी और तिकड़मी नरोत्तम मिश्रा ने डबरा में रहने वाली कोमल अग्रवाल को अपने प्रेम के जाल में फंसाया था। कोमल को अपनी कामांधता का लगातार शिकार बनाने वाले नरोत्तम मिश्रा का नाम कोमल की रहस्यमयी मृत्यु से भी जोड़ा जाता है और चर्चित है कि नरोत्तम मिश्रा की शह पर ही कोमल की हत्या की गई थी। यह तो एक उदाहरण मात्र है, वर्ना, सच्चाई यह है कि नरोत्तम मिश्रा ने दर्जनों लड़कियों-महिलाओं का अपनी वासना का शिकार बनाया है। अपनी घृणित काम वासना को पूरा करने के लिए इस शख्स ने घास बेचने वाली अबोध लड़कियों से लेकर शिक्षिकाओं, नगरपालिका में कार्यरत महिलाओं तक को नहीं छोड़ा है, इस तरह के आरोप निरंतर लगाए जाते हैं। यह भी मशहूर है कि नरोत्तम मिश्रा का चरित्र इस कदर गिरा हुआ है कि वह भोली-भाली लड़कियों को फंसाने के लिए उनके परिवारजनों को पार्टी पदाधिकारी बनाने और ठेका दिलाने जैसे हथकंडे अपनाने से भी नहीं चूकते हैं।

नरोत्तम मिश्रा के राजनीतिक जीवन की शुरूआत ही एक अपराधी के रूप में हुई थी। फिरौती-अपहरण, सुपारी लेकर हत्या करवाने और बाहुबल के दम पर मकानों-जमीनों पर कब्जा करवाने वाले इस नेता ने अपनी कुत्सित मंशाओं की पूर्ति के लिए अपराधियों से न केवल बढ़-चढ़कर सांठ-गाठ की, बल्कि नेतागिरी की आड़ लेकर

धोखाधड़ी करके भाई आनंद मिश्रा को बनाया रजिस्ट्रार

महिला प्रेमी के रूप में मशहूर भ्रष्टाचारी आनंद मिश्रा की शराबनोशी के किस्से जीवाजी विवि में निरंतर गूंजते रहते हैं

राजनीति तथा पद के प्रभाव का दुरुपयोग करके काली कमाई करने और जघन्य आपराधिक कृत्यों को अंजाम देने वाले नरोत्तम मिश्रा ने अपने भाईयों तथा नाते-रिश्तेदारों को मनमर्जी उपकृत किया है। नरोत्तम के भाई आनंद मिश्रा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिन्हें तमाम नियम-कानूनों की अनदेखी करते हुए जीवाजी विश्वविद्यालय का रजिस्ट्रार बनाया गया, जबकि आनंद मिश्रा न इस पद के लिए उपयुक्त हैं, न ही आवश्यक अर्हताएं रखते हैं। केन्द्रीय मंत्री ज्यातिरादित्य सिंधिया की दादी एवं ग्वालियर से सांसद यशोधराराजे सिंधिया की मां स्व. राजमाता विजयाराजे सिंधिया के अथक प्रयासों से स्थापित जीवाजी विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रार रहते हुए आनंद मिश्रा ने भ्रष्टाचार के जो रिकार्ड कायम किए हैं, उनका दूसरा उदाहरण ढूंढना मुश्किल होगा। विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयंती वर्ष मनाने के नाम पर एक करोड़ रुपए की बंदरबांट हो या विश्वविद्यालय के समस्त संसाधनों और स्रोतों के दुरुपयोग का मामला, आनंद मिश्रा ने कभी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। रजिस्ट्रार के रूप में उन्हें विवि के किसी भी वाहन का उपयोग करने की पात्रता नहीं है लेकिन वे एक नहीं, छह-छह लग्जरी वाहनों का धड़ल्ले के साथ उपयोग करते हैं। प्रति शुक्रवार वे जेयू के वाहन से ही डबरा जाते हैं वहीं डबरा में विश्वविद्यालय के दो वाहन मय चालक हमेशा मौजूद रहते हैं, जिनका उपयोग उनके

उन्हें कानून से संरक्षण भी दिलवाया, जिसके कारण नरोत्तम मिश्रा के तमाम काले धंधे बराबर फलते-फूलते रहे। पहली बार विधायक बनने के बाद तो नरोत्तम ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और घपले-घोटालों, फर्जीवाड़ों, घृणित एवं नृशंस अपराधों, रहस्यमयी हत्याकांडों और फिरौती-अपहरण की सिलसिलेवार कारगुजारियों को बेशर्मी के साथ अंजाम देते चले गए। यह सिलसिला इनके मंत्री बनने के बाद भी न सिर्फ जारी है बल्कि एक से बढ़कर एक गंभीर घटनाक्रमों को सामने ला रहा है। डबरा सीट आरक्षित होने के बाद जब नरोत्तम मिश्रा दतिया विधानसभा क्षेत्र से विधायक का चुनाव लड़े और जीते, तब से

सगे-संबधी और पुत्र-भतीजे अवैध रूप से करते हैं। आनंद मिश्रा की व्यक्तिगत चरित्रावली भी विवादों से घिरी रहती है। महिला प्रेमी होने के इनके किस्से तो आम हैं ही, विश्वविद्यालय की जमा रकम का भी वे धड़ल्ले से उपयोग कर रहे हैं। जेयू के पचास करोड़ रुपए से भी ज्यादा की रकम आनंद मिश्रा की मनमर्जी से बाहर के विभिन्न बैंकों में डिपाजिट कराया जाना जहां भ्रष्टाचार का एक उदाहरण है वहीं कार्यक्रमों-आयोजनों की आड़ में विश्वविद्यालय के धन का दुरुपयोग करना उनकी कारगुजारियों में शामिल है। प्रायवेट कॉलेजों की संबद्धता, दूरस्थ शिक्षा, इंजीनियरिंग और पर्यटन संस्थान जैसे महत्वपूर्ण विभागों में अपने सगे-संबंधियों और निकटस्थ लोगों को नियुक्तियां देकर वे अब तक कितनी धनराशि का गोल-मोल करा चुके हैं, इसका अंदाजा लगाना कठिन है। अपने सजातीय विनोद शर्मा, जो डबरा के किसी कॉलेज में शिक्षक हैं, को आनंद मिश्रा ने बीएड परीक्षा का कार्डिनेटर नियुक्त करके बीएड परीक्षाओं के नाम पर जो अकूत भ्रष्टाचार किया है, उसे विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक बड़ा उदाहरण माना जाता है। तृतीय और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की नियुक्तियों एवं पदोन्नति में भी आनंद मिश्रा ने ढेरों घपले-घोटाले किए हैं। विश्वविद्यालय की छवि धूमिल करने में भी आनंद मिश्रा ने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। उनके रजिस्ट्रार रहते कुलपति के खिलाफ जारी कुर्की आदेश के पीछे आनंद मिश्रा के नकारापन को ही जिम्मेदार माना जाता है जिन्होंने पैसा कमाने के लालच में ऐसे वकीलों को प्रकरण लड़ने के लिए चुना, जिन्होंने आनंद मिश्रा को मनोवांछित कमीशन तो दिया लेकिन अदालती लड़ाई में विश्वविद्यालय का पक्ष प्रस्तुत करने में नाकामी बरती, जिसके चलते विश्वविद्यालय के कुलपति के खिलाफ न्यायालय ने कुर्की का आदेश जारी कर दिया। यहां नरोत्तम मिश्रा की भूमिका का उल्लेख किया जाना जरूरी है जिन्होंने अपने भाई आनंद मिश्रा को उपकृत करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा है। नरोत्तम मिश्रा द्वारा अपने पद और प्रभाव का दुरुपयोग करके आनंद मिश्रा को उपकृत करने का ही नतीजा है जो हाईकोर्ट में अपने खिलाफ भ्रष्टाचार का प्रकरण प्रचलित होने के बावजूद आनंद मिश्रा अब भी रजिस्ट्रार पद पर काबिज हैं। नरोत्तम मिश्रा के हस्तक्षेप के कारण ही आनंद मिश्रा को सन् 2007-08 में रजिस्ट्रार पद पर हटाए जाने के बाद फिर से रजिस्ट्रार बनने का मौका मिला, यह बात किसी से छिपी नहीं है। नरोत्तम मिश्रा की शह पर जीवाजी विवि के रजिस्ट्रार जैसे महत्वपूर्ण पद पर आनंद मिश्रा का होना इसलिए और भी गंभीर हो जाता है क्योंकि इनका शैक्षणिक इतिहास बेहद दागदार है। स्नातकोत्तर (एम ए इतिहास) की परीक्षा में अनुचित साधन (नकल) प्रयोग करने में आरोपित रह चुके आनंद मिश्रा के बारे में यह भी मशहूर है कि इन्होंने पीएचडी एवं डी.लिट की उपाधियां भी फर्जी हथकंडों से प्राप्त की हैं। यदि इनकी पीएचडी और डी.लिट शोधग्रंथों की निष्पक्ष रूप से जांच करा ली जाए तो नकल के कई प्रमाण जुटाए जा सकते हैं। रजिस्ट्रार पद पर काबिज आनंद मिश्रा का नौकरी का रिकार्ड भी अत्यंत विवादास्पद रहा है। इन्होंने अपने शिक्षक कैरियर की शुरूआत डबरा के एक प्रायवेट कालेज डॉ. वृंदसहाय महाविद्यालय से की थी। जीवाजी विश्वविद्यालय का रिकार्ड गवाह है कि आनंद मिश्रा इस महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर विश्वविद्यालय पद नियम 28(17) में भी नियुक्त नहीं थे। नरोत्तम मिश्रा के राजनीतिक प्रभाव के चलते एवं एक बड़े भ्रष्टाचार, जिसमें आनंद मिश्रा ने दलाल की भूमिका अदा की थी, राज्य शासन ने महाविद्यालय का अधिग्रहण कर लिया और आनंद मिश्रा के लिए विश्वविद्यालय का रजिस्ट्रार बनने की राह खुल गई।

यह क्षेत्र भी उनके कारनामों के चलते त्राहि-त्राहि करने के लिए मजबूर है। मंत्री बनने से लेकर आज तक के समय की ही बात करें तो मालूम चलता है कि ऐसे एक नहीं, दर्जनों मामले हैं, जिनमें नरोत्तम मिश्रा की संलिप्तता के कारण करोड़ों-करोड़ की लूट हुई है और अनेक सनसनीखेज आपराधिक घटनाएं सामने आई हैं। फिर चाहे शिक्षा विभाग में पेपर छपवाने का मामला हो, चाहे ड्रेस वितरण, साइकिल वितरण में कमीशनखोरी का, नरोत्तम मिश्रा ने जमकर काली कमाई की है। नगरीय प्रशासन मंत्री रहते हुए इन्होंने हर नगर निगम और नगर पालिका अधिकारी से तमाम कामों के लिए दलाली ली, जिसमें इनके रिश्तेदार बंटी

फूट डालो राजनीति चमकाओं...

छल-प्रपंचों, षड्यंत्रों और धौंस-धपट की राजनीति करने वाले नरोत्तम मिश्रा में अपने हित के लिए किसी भी हद तक जाने का माद्दा है, फिर चाहे अपने ही कुनबे में फूट डालकर स्वार्थ सिद्ध हो रहे हों। फूट डालकर राजनीति चमकाने में विश्वास रखने वाले इस नैतिकता विहीन व्यक्तित्व में फरेब कूट-कूटकर भरा है, जिसका इस्तेमाल वे मंत्रिमण्डल में बखूबी करते हैं। अफवाह फैलाकर यह भ्रम फैलाने में निरंतर लगे रहते हैं कि मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री के सबसे करीबी वे हैं, फिर चाहे इसके लिए अनूप मिश्रा के बारे में उलटी-सीधी कोई भी बात बोलना पड़ जाए या कैलाश विजयवर्गीय और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बीच मतभेदों की झूठी खबर फैलाना पड़े। इस तमाम कारगुजारियों को अंजाम देने के पीछे नरोत्तम मिश्रा का ध्येय यह रहता है कि कैसे भी खुद को मंत्रिमण्डल में सबसे कद्दावर दर्शाया जा सके। उनके द्वारा फैलाई जाने वाली अफवाहों, झूठी खबरों और गलतफहमियां फैलाने के लिए किए जाने वाले षड्यंत्रों के कारण मंत्रिमण्डल में आए दिन असहज स्थितियां बनती रहती हैं। खुद को महत्वपूर्ण दिखाने की इन तमाम कोशिशों के बूते नरोत्तम ग्वालियर, दतिया, डबरा आदि इलाकों में पुलिस और प्रशासनिक तंत्र में यह भ्रम फैलाने में लगे रहते हैं कि सीएम के सबसे करीबी खुद वे ही हैं। फूट डालने की अपनी इन दुष्प्रवृत्तियों के कारण वे पार्टी की सांगठनिक एकता में भी दरार पैदा करते रहते हैं।

गौतम तथा मुकेश शर्मा जैसे दलाल मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। भतीजे विवेक की बहू के नाम से मिश्रा ट्रेडिंग कम्पनी बनाकर हर नगरपालिका में लाखों रुपए मूल्य की सेनेट्री और जनरल सप्लाई जैसे दर्सियों काले कारनामे भी नरोत्तम मिश्रा के भ्रष्टाचारी चरित्र को सामने लाते हैं, जिनमें सारा काम फर्जी था। यानि, सप्लाई हुई ही नहीं, और मनमर्जी भुगतान ले लिया गया। ट्रांसफर रुकवाने और करवाने की एवज में रिश्वत का साम्राज्य खड़ा करने वाले नरोत्तम ने अवैध ढंग से पैसा कमाने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा है। भ्रष्टाचारी चरित्र के धनी इस शख्स ने अवैध वसूली के क्षेत्र में भी अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। बजरी की ट्राली जो 500 रुपए में मिलती थी, नरोत्तम के मंत्री बनने के बाद चार गुना महंगी हो चली क्योंकि जबलपुर के एक ठेकेदार से सांठ-गांठ करके इन्होंने व्यवस्था शुल्क का मनमाना चलन शुरु करा दिया, जिसकी तमाम ट्रालियों, ट्रकों और डम्परों से जबरन वसूली शुरू हो गई। नतीजतन बजरी की ट्राली अब बाजार में 2000 रुपए की बिकती है। आरोप है कि व्यवस्था शुल्क के नाम पर नरोत्तम मिश्रा के पास प्रतिदिन 50 हजार रुपए पहुंचते हैं। यही नहीं, शुगर मिल की जिस जमीन पर

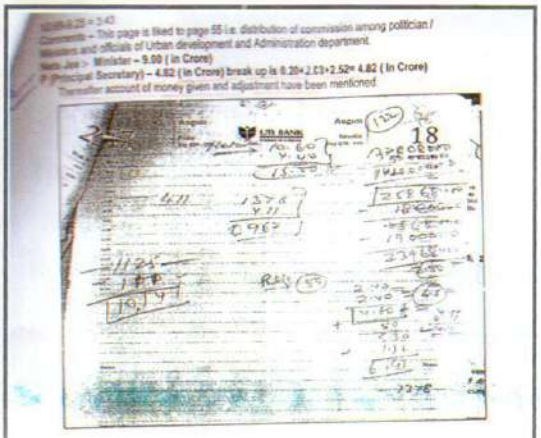

मंत्रियों और अफसरों को दिए गए कमीशन का विवरण

मंत्री एक, सरकारी मकान दो...

सामान्य प्रशासन विभाग के सर्कुलर में इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि कोई सांसद हो या मंत्री-विधायक, मध्यप्रदेश में उसे केवल एक ही शासकीय आवास दिया जा सकता है लेकिन नरोत्तम मिश्रा इस नियम को ठेंगा दिखाते हुए दो-दो सरकारी बंगले आवंटित कराए हुए हैं। मंत्री की हैसियत से उनके पास राजधानी भोपाल के पॉश इलाके चार इमली में आलीशान बंगला है वहीं दतिया में भी एक सरकारी बंगला उन्हीं के नाम आवंटित है। इससे शासन के नियम,कानूनों और परंपराओं की गंभीर रूप से अनदेखी हो रही है वहीं यह सवाल उठ रहे हैं कि क्या मंत्री होने भर से कोई इतना शक्तिशाली हो जाता है जो सामान्य प्रशासन विभाग के सर्कुलर की अवहेलना कर सके?

अवैध रूप से कब्जा करके नरोत्तम मिश्रा ने अपने बड़े भाई श्रीमन मिश्रा के लिए करोड़ों का अस्पताल बनवाया है, वहां भी भ्रष्टाचार करने से नहीं चूका गया । शुगर मिल में नरोत्तम मिश्रा का घोषित दबदबा था जिसके चलते यहां प्रति क्विंटल पर दो रुपए के हिसाब से उन्हें कमीशन जाता था, जिसकी राशि लाखों में थी। नरोत्तम मिश्रा के संरक्षण में उनको कृपापात्र गुंडे सरेआम 500 रुपए में ट्राली की पर्ची किसानों को बेचते थे और गुंडागर्दी की दम पर हजारों-हजार रुपए कमाते रहे। नगर पालिका ठेका, हाट बाजार ठेका, मंडी में धर्मकांटा और चारों नाकों पर गुंडों द्वारा की जाने वाली अवैध वसूली भी नरोत्तम मिश्रा के संरक्षण में ही चल रही है। आम नागरिकों को आतंकित करने वाले गुंडों पर मेहरबान नरोत्तम मिश्रा का नाम झूठे केस लगवाकर फंसाने और वसूली करके छुड़वाने के धंधे में भी प्रमुखता के साथ लिया जाता है, जो दलाली के खेल की निम्नतम पराकाष्ठा ही कही जा सकती है। जबरन जमीनों पर कब्जा करने के कारनामों की फेहरिश्त में भी नरोत्तम मिश्रा के नाम जगह-जगह दर्ज हैं। डबरा में चिनौर रोड पर

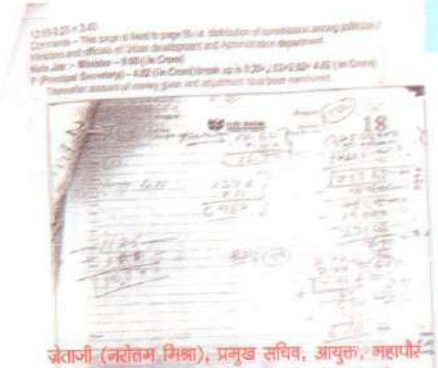

जेताजी (नरोत्तम मिश्रा), प्रमुख सचिव, आयुक्त, महापौर को दिए गए कमीशन का विवरण, जिनमें सभी को कूट नामों से दर्शाया गया।

कोमल अग्रवाल... यही नाम हैं डबरा में रहने वाली उस मासूम लड़की का, जिसे नरोत्तम ने अपने प्रेमजाल में फंसाया, फिर अपनी काम-वासना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया। कोमल अग्रवाल की रहस्यमयी मौत के पीछे भी नरोत्तम मिश्रा को ही गुनाहगार माना जाता है।

सरकारी जमीन और नाले पर कब्जा करके जमीन को अपने नाम करवाकर खोला गया पेट्रोल पम्प ऐसे कारनामों की एक नजीर भर है। डबरा में नरोत्तम मिश्रा की शह पर कितनी सरकारी और निजी जमीनों पर इनके वरदहस्त प्राप्त लोगों ने कब्जे कर रखे हैं, इसके हिसाब लगाना बेहद मुश्किल है। ठेकों में कमीशन वसूले बगैर चैन नहीं लेने वाले नरोत्तम मिश्रा की गुंडागर्दी का आलम यह है कि सिंध नदी के स्टॉप डेम निर्माण के लिए दिल्ली से आए ठेकेदार को मारपीट कर भगा दिया गया और टेण्डर नहीं डालने दिया गया। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि नरोत्तम सारथी कंस्ट्रक्शन नामक उस कम्पनी को ठेका दिलाना चाहते थे, जिसने पिछले चुनावों में उन्हें जमकर पैसा दिया गया। सारथी कस्ट्रक्शन कम्पनी को यह ठेका पन्द्रह करोड़ में दिया गया, जबकि काम महज पांच करोड़ रुपए का था। जाहिर है, ठेके की एवज में मिली बड़ी रकम नरोत्तम मिश्रा के खाते में गई। भ्रष्टाचार के अकूत कारनामों की बदौलत ही नरोत्तम मिश्रा को भ्रष्टाचारियों का सरगना माना जाने लगा है। इनकी सम्पत्ति सीतापुर में है, उपरांय में मिश्रा फार्म हाउस, डबरा में मिश्रा गैस एजेंसी, ग्वालियर और भोपाल में आलीशान मकान, चिनौर रोड पर मिश्रा पेट्रोल पम्प के साथ-साथ शिवपुरी, हरिद्वार, दिल्ली, भोपाल, मुम्बई और नैनीताल में कई होटल और मकान नरोत्तम मिश्रा के ही बताए जाते हैं।

भ्रष्टाचार के अपने नित-नए कारनामों की बदौलत नरोत्तम मिश्रा ने अपार धन-सम्पदा अर्जित की है, और भाजपा के दामन को ढेरों दाग दिए हैं। शिक्षा मंत्री रहते हुए नरोत्तम मिश्रा ने प्रिंटिंग कार्य और पुस्तक खरीदी में जो घोटाला किया, उस मामले में लोकायुक्त मध्यप्रदेश में प्रकरण कायम हुआ, जिसकी जांच प्रचलित है और आरोप है कि नरोत्तम के दबाव में प्रकरण से संबंधित विभागीय जांच प्रतिवेदन एवं कागजात लोकायुक्त को नहीं दिए जा रहे हैं, ताकि नरोत्तम पर आरोप प्रमाणित नहीं हो पाएं। जबलपुर का प्रभारी मंत्री रहते हुए नरोत्तम मिश्रा ने किसानों की बेशकीमती जमीन का आवंटन एक ही परिवार के सदस्यों को अवैध ढंग से कराया। इस मामले में एक माह की आपत्ति अवधि से पहले

जो दतिया लाए, उन्हें ही मरवा दिया...?

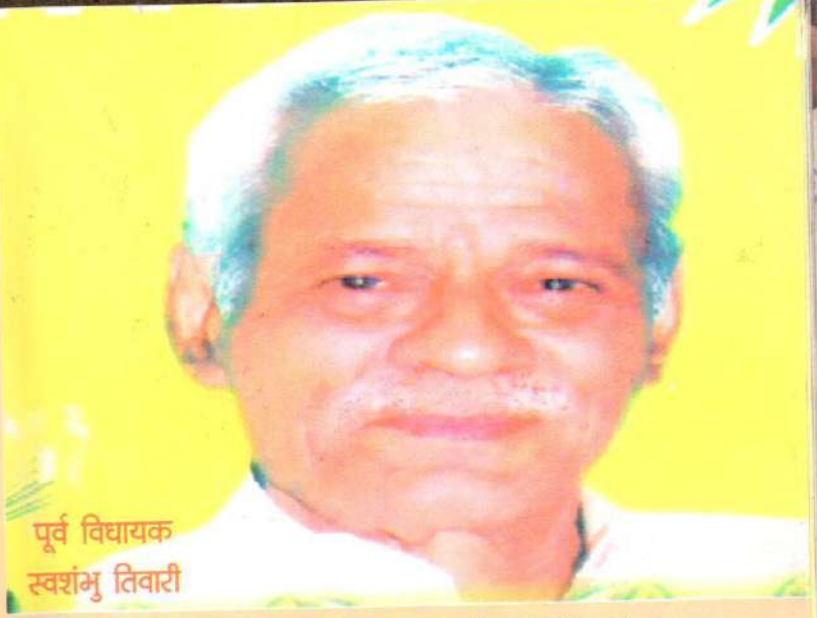

पूर्व विधायक
स्वशंभु तिवारी

नरोत्तम मिश्रा को घोर धूर्त, अवसरवादी, निर्लज्ज, नृशंस अपराधी, धोखेबाज और फरेबी ही नहीं कहा जाता, इन्हें एक ऐसे कपटी अहसान फरामोश के रूप में भी जाना जाता है जो जिसके कंधों का सहारा लेता है, बाद में उसे ही काट डालता हैं। पूर्व विधायक शंभु तिवारी इसका सबसे गंभीर उदाहरण माने जाते हैं जो अब इस दुनिया में नहीं हैं और कहा यही जाता है कि उन्हें अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में बाधा समझकर नरोत्तम मिश्रा ने ही मरवाया था। शंभु तिवारी की संदिग्ध मौत नरोत्तम मिश्रा की अहसानफरामोशी का ही परिणाम मानी जाती है, चूंकि जब डबरा सीट आरक्षित हो गई, तब पूर्व विधायक शंभु तिवारी ही थे, जिन्होंने नरोत्तम को सुझाया था कि वे दतिया से चुनाव लड़ें। वे नरोत्तम को न सिर्फ दतिया लाए बल्कि उनकी जीत के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाने से लेकर पार्टी टिकट के लिए प्रदेश भाजपा के आला नेताओं की सहमति पाने के लिए जीतोड़ मेहनत की, जिसके परिणामस्वरूप ही नरोत्तम दतिया से विधानसभा चुनाव लड़े और जीत पाए, लेकिन स्वार्थ पूरा होने के बाद शुभचिंतकों को कांटा समझने वाले नरोत्तम मिश्रा ने शंभु तिवारी से शनैः-शनैः दूरियां बढ़ाना शुरू कर दिया और 9 अप्रैल, 2011 को जब संदिग्ध परिस्थितियों में शंभु तिवारी मृत पाए गए, तब यही माना गया कि वे नरोत्तम मिश्रा की अहसान फरामोशी की बलि चढ़े हैं। दावा करने वालों का आज भी यही कहना है कि शंभु तिवारी की मौत की अगर गहराई से जांच की जाए तो नरोत्तम मिश्रा की संलिप्तता स्वतः जाहिर हो जाएगी।

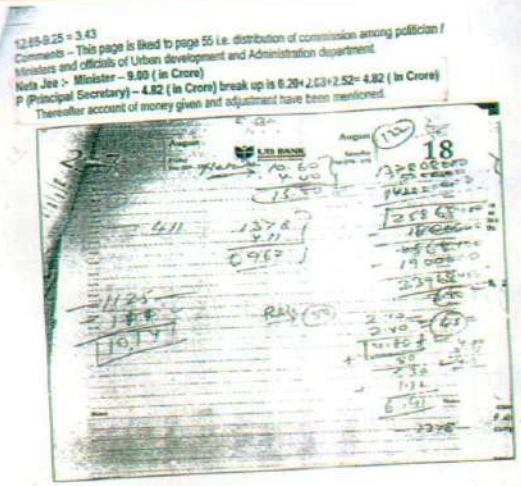
12.65-9.25 = 3.43
Comments – This page is liked to page 55 i.e. distribution of commission among politician / Ministers and officials of Urban development and Administration department.
Nota Jee :- Minister – 9.00 (in Crore)
P (Principal Secretary) – 4.82 (in Crore) break up is 0.29+2.03+2.52= 4.82 (in Crore)
Thereafter account of money given and adjustment have been mentioned.

ही ग्राम मगरगुंहा, तहसील शहपुर, जबलपुर की जमीन भारी घोटाला करके उपकृतों को आवंटित कर दी गई। दतिया जिले की जल आवर्धन योजना में नरोत्तम मिश्रा द्वारा किए गए घोटाले ने भी जमकर सुर्खियां बटोरी थीं। दतिया शहर के लिए पानी की समस्या के निदान के लिए जल आवर्धन योजना की स्वीकृति केन्द्र सरकार ने दी थी, जिसके तारतम्य में एकमुश्त राशि, लगभग 17 करोड़ रुपए, संचालनालय, नगरीय प्रशासन एवं विकास को 17 जनवरी, 2011 में भेजी गई थी। इस योजना के तहत दतिया जिले में पानी की किल्लत समाप्त करने के लिए उत्तम क्वालिटी की पाइप लाईन, फिल्ट्रेशन प्लांट तथा पानी की टंकियों के लिए काम होना था। 23.45 करोड़ की इस योजना में केन्द्र सरकार द्वारा दी गई राशि के

जाली नोटों का धंधा चलाया

बाजार, मुरार, गोला का मंदिर, मछली मार्केट, गांधी मार्केट आदि दर्जनों इलाकों में नकली नोटों के मामले एक के बाद एक सामने आए तो पुलिस ने जाली नोट सरगना को धर दबोचने का अभियान चलाया। उसे सफलता तब मिली जब नरोत्तम मिश्रा के दामाद बंटी गौतम के रिश्तेदार और पार्टनर तारा चौबे के घर से जाली नोट बरामद हुए

आमजन के बीच भय और आतंक का पर्याय बने नरोत्तम मिश्रा का जाली नोट चलाने जैसी घोर आपराधिक तथा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से भी नाता है। जाली नोट चलाकर लोगों को ठगने और देश की अर्थव्यवस्था को खोखला करने की साजिश में लगे नरोत्तम मिश्रा के इन काले कारनामों का पर्दाफाश सन् 2006 में तब हुआ जब सारा डबरा शहर जाली नोटों के कारण भय और आतंक के साए में डूबा था और पुलिस की कार्यवाही में यह सनसनी खेज खुलासा हुआ कि जाली नोटों का कारोबार किसी और नहीं, स्वयं नरोत्तम मिश्रा के संरक्षण में इनके रिश्तेदार बंटी गौतम द्वारा चलाया जा रहा था। पुलिस इस मामले में अपराधियों तक तब पहुंची जब डबरा और ग्वालियर में एक के बाद एक जाली नोट चलाए जाने के खुलासे हुए। जवाहरगंज, डबरा की देशी शराब की दुकान से दो व्यक्ति नकली नोट चलाते हुए पकड़े गए तो ढीमरपुरा की एक किराना दुकान पर सौ रुपए का नकली नोट चलाते हुए युवक को पकड़ा गया। इंदरगंज थाना क्षेत्र के सेंट्रल बैंक की शाखा में पांच-पांच सौ के 31 नोट जमा कराए जाने का सनसनीखेज मामला भी पुलिस के सामने आया। सन् 2004 से लेकर सन् 2006 तक माधोगंज, सराफा

पुलिस द्वारा जप्त किए गए जाली नोट, जिनसे नरोत्तम मिश्रा द्वारा चलाए जा रहे जाली नोट रैकेट का पर्दाफाश हुआ

अतिरिक्त लगभगभ 6 करोड़ रुपए दतिया नगरपालिका ने दिए थे। नरोत्तम मिश्रा ने इस योजना में भ्रष्टाचार का मौका ताड़ा और सारी योजना गुणवत्ताविहीन पाइप लाइनों तथा घटिया टंकियों की भेंट चढ़ गई। इस योजना के नाम पर नरोत्तम मिश्रा द्वारा करोड़ों रुपए कमाए गए हैं।

शुगर फैक्ट्री की जमीन हड़पी

नरोत्तम मिश्रा ने केवल खुद ही छल-फरेब और धोखाधड़ी नहीं

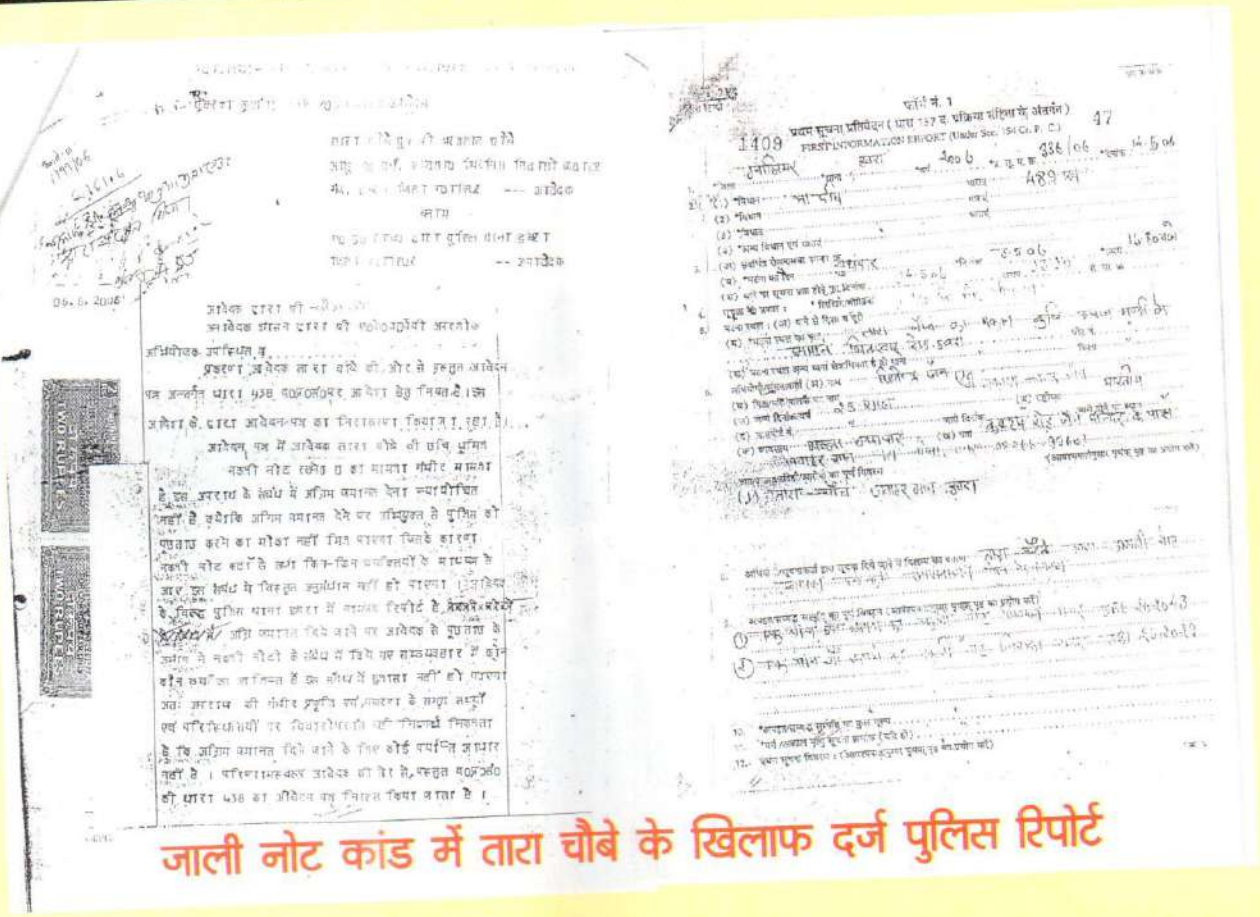

जाली नोट कांड में तारा चौबे के खिलाफ दर्ज पुलिस रिपोर्ट

और इस बात का खुलासा हुआ कि जाली नोटों का सारा कारोबार नरोत्तम मिश्रा के संरक्षण में चलाया जा रहा था। तारा चौबे के खिलाफ डबरा कोतवाली में नकली नोट चलाने के गंभीर आरोपों में प्रकरण क्रमांक-336/06, दिनांक 14/5/06 पंजीबद्ध हुआ लेकिन पुलिस आज तक तारा चौबे के विरुद्ध न्यायालय में चालान प्रस्तुत नहीं कर पाई है क्योंकि ऐसा होने पर नरोत्तम मिश्रा भी आरोपी बनते हैं। इसी कारण पुलिस पर मामला दबाने को लेकर नरोत्तम मिश्रा का भारी दबाव रहा। इसी दबाव का नतीजा है कि नरोत्तम मिश्रा का नाम आने पर जब तत्कालीन गृहमंत्री नागेन्द्र सिंह ने जांच के आदेश दिए तो इस आदेश को भी कचरे की टोकरी में डाल दिया गया। इसी के चलते डबरा और ग्वालियर में नकली नोटों का कारोबार आज भी धड़ल्ले से चल रहा है और पुलिस आंखें मूंदे रहने के लिए विवश है क्योंकि यह काला कारोबार नरोत्तम मिश्रा के संरक्षण में चलता है।

की है, अपने पद और प्रभाव का इस्तेमाल करके अपने भाइयों और नाते-रिश्तेदारों को भी लूट करने का भरपूर मौका दिया है। नरोत्तम के बड़े भाई डॉ. श्रीमन मिश्रा प्रायवेट प्रेक्टिस करते हैं जिन्होंने डबरा में शुगर फैक्ट्री के लिए ग्वालियर स्टेट द्वारा दी गई जमीन पर करोड़ों की लागत से बना आलीशान अस्पताल खोल रखा है। उक्त जमीन से लगे एक बड़े हिस्से में नरोत्तम मिश्रा की शह पर प्लाटिंग करके भूमि विक्रय का गोरखधंधा भी अंजाम दिया गया है। नरोत्तम मिश्रा के बड़े भाई डॉ श्रीमन मिश्रा द्वारा उक्त भूमि पर करोड़ों की लागत से नर्सिंग होम बनाया गया है, इसके अतिरिक्त बंटी गौतम, राजेन्द्र सिंह परमार, केन्द्रीय सहकारी बैंक ग्वालियर के अध्यक्ष कौशल शर्मा, गुड्डू शर्मा आदि के अवैध मकान एवं प्रतिष्ठान भी अवैध रुप से इसी जमीन पर निर्माण कराए गए हैं। इन सभी प्लाटों की राजा स्वीट्स ग्वालियर के मालिक हेमू अग्रवाल द्वारा रजिस्ट्री की गई

जमीन खरीदी से संबंधित दस्तावेज जिसे आयकर अधिकारियों ने मुकेश शर्मा के घर से जप्त किया।

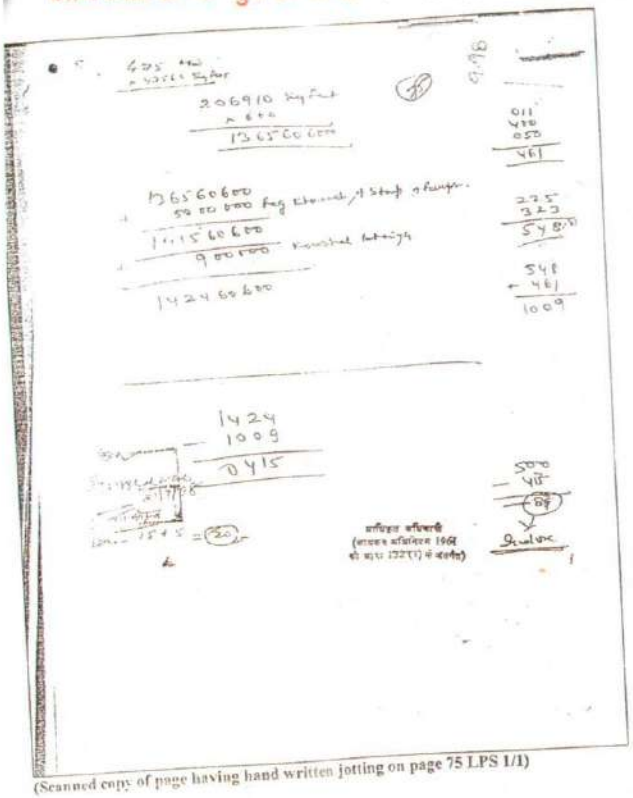

(Scanned copy of page having hand written jotting on page 75 LPS 1/1)

है। नरोत्तम मिश्रा ने सरकारी जमीन पर ये तमाम अवैध निर्माण करके करोड़ों रुपए कमाए हैं जबकि उक्त जमीन के संबंध में फैसला लेते हुए ग्वालियर हाईकोर्ट द्वारा शुगर फैक्ट्री की समस्त आवंटित भूमि को शासकीय भूमि घोषित किया जा चुका है। मध्यप्रदेश मंत्रिमण्डल की सन् 2008 में संपन्न बैठक में भी उक्त भूमि को शासकीय माना गया है और संयुक्त उपक्रम की एविएशन सिटी बनाने का निर्णय लिया गया है। इसके बावजूद नरोत्तम मिश्रा का इस बेशकीमती जमीन पर कब्जा बदस्तूर काबिज है और उनके खिलाफ किसी भी तरह की कार्यवाही नहीं की जा रही है। मध्यप्रदेश विधानसभा में जब कांग्रेस विधायक इमरती देवी ने इस जमीन पर कब्जे को लेकर प्रश्न पूछा था तब राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने अपने जवाब में यह कहा था कि डबरा में शुगर मिल को लीज पर दी गई शासकीय भूमि की शर्तों का उल्लंघन होने एवं भूमि पर प्लाटिंग होने के मामले की जांच एक माह में करा ली जाएगी, लेकिन इस बात को महीनों बीत चुके हैं, न जांच पूरी हो सकी है, न ही कोई कार्यवाही, और कब्जे पूर्ववत काबिज हैं। विधानसभा में जब उक्त मामले को लेकर चर्चा चल रही थी, तब नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने हस्तक्षेप करते हुए यह आरोप लगाया था कि भूमि पर कब्जे में सदन में बैठे कुछ सदस्य शामिल है, उनका इशारा नरोत्तम मिश्रा की ओर ही था, और इस बात पर नरोत्तम बुरी तरह भड़क गए थे। राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा के जवाब से यह स्पष्ट था कि शासकीय भूमि पर अवैध कब्जे किए गए हैं जिनमें नरोत्तम मिश्रा की संलिप्तता स्वतः प्रमाणित होती है, बावजूद इसके बेदखली की कार्यवाही नहीं की जा रही है। यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि नरोत्तम मिश्रा की शह पर ही क्षेत्र में गरीब किसानों को उनके गन्ने का भुगतान नहीं हो सका है। एक अनुमान के मुताबिक डबरा, दतिया और आसपास के किसानों के 40 करोड़ से भी ज्यादा भुगतान शुगर फैक्ट्री में अब तक अटका पड़ा है और शुगर फैक्ट्री बंद होने से लेकर किसानों के बकाया का भुगतान नहीं होने का कारण भी नरोत्तम मिश्रा स्वयं हैं।

5. LPS 25 pg 9 is copy of interoffice memo dtd 12.3.08 of Nagarjuna construction company found at the residence of Mukesh Sharma at the time of search.

These facts bring the entire set of transactions emanating from the bank account of M/s Nagarjuna construction company in ICICI bank Bhopal into the realm of suspicion.

The details of concerns which were routing the funds from Nagarjuna construction company were enquired into and the following details emerge from the enquiries which is given in the following table –

sno	Name of the Firm & Proprietor	Address as per Bank Statement/Registration of Firm Form(7)	Findings of inspector's enquiry of the addresses	Remarks
1	Ashok Agency/Ashok Sahu S/O Chhannulal Sahu	(1) A-4(Sukhliya Indore	(1) (a) No such Firm/Name exists.	Main Business premises of Ashok Agency is at Kalimath Shukla Nagar Rd. madan Mahal Jabalpur
			(b) House belongs to Mr. RK Vyas & residing with family since last 20 years	(As per Form-7 submitted with bank opening form

फर्जी कंपनिया, जिनकी आड़ में पैसों की फंडिंग की गई

ड्राइवर कल्लू था रिश्वतखोरी का दलाल

भ्रष्टाचारियों द्वारा अपने काले कारनामे मित्र-रिश्तेदारों के जरिए अंजाम दिए जाने के तमाम किस्से हैं, लेकिन नरोत्तम मिश्रा की कारगुजारी का खुलासा मुकेश शर्मा के यहां पड़े जिस आयकर छापे से हुआ, उससे यह चौंका देने वाली बात सामने आई कि मध्यप्रदेश सरकार का यह भ्रष्ट मंत्री रिश्वखोरी के अपने धंधे को ड्राइवर के जरिए अंजाम दे रहे थे। ड्रायवर का नाम उस्मान खान कल्लू है। आयकर छापे से खुलासा हुआ कि नरोत्तम मिश्रा को रिश्वत में जो रकम मिलती थी, उसे कल्लू के बैंक लॉकर मे जमा किया जाता था।

बताया जाता है कि नरोत्तम मिश्रा के तमाम काले कारनामों में उसके खासमखास की भूमिका अदा करने वाले मुकेश शर्मा ने ही उस्मान खान कल्लू के नाम से बैंक लॉकर खुलवा रखे थे। आयकर जांच की प्रक्रिया में उस्मान खान के पांच-लॉकर पाए गए, जिनमें नरोत्तम मिश्रा की काली कमाई के एक करोड़ चौबीस लाख रुपए नकद रखे थे। उस्मान खान कोई और नहीं, मंत्री नरोत्तम मिश्रा का ही खास सेवक है जिसे चुनाव जीतने के बाद नरोत्तम भोपाल ले आए थे। यही खास सेवक नरोत्तम मिश्रा की कार चलाता है। उस्मान खान कल्लू पर नरोत्तम मिश्रा की किस कदर इनायत है इसका अनुमान सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि ग्वालियर मे नरोत्तम मिश्रा की एक होटल मे वह पार्टनर है। यही नहीं, भोपाल में अरेरा कॉलोनी जैसे महंगे और पॉश इलाके में उसके नाम पर एक बंगला भी है।

नरोत्तम मिश्रा के काले कारनामों में कल्लू मुकेश शर्मा के इशारे पर काम करता था। यहां मुकेश शर्मा के बारे में यह बताना जरूरी हो जाता है कि नरोत्तम का यह खासमखास शुरू से ही दलाली का काम करता आ रहा है। जब मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी, तब मुकेश शर्मा आरटीओ (यातायात) में खासी पकड़ रखता था और लेन-देन के बूते दलाली करते हुए आरटीओ की मनमाफिक पोस्टिंग-ट्रांसफर कराया करता था। नरोत्तम मिश्रा के ड्रायवर उस्मान खान कल्लू की कारगुजारियों का खुलासा मुकेश शर्मा के घर पर मारे गए आयकर छापे में तब हुआ जब अधिकारियों ने मुकेश शर्मा की डायरी खंगाली। पता चला कि कल्लू के पांच बैंक लॉकर टीटी नगर स्थित बैंक ऑफ राजस्थान में थे। आयकर अधिकारियों ने जब इन लॉकरों को खोला तो इनमें एक करोड़ चौबीस लाख रुपए की नकद रकम के अलावा बेनामी संपत्तियों के कई दस्तावेज भी मिले।

मामला अभी आयकर विभाग की जॉच में है, इसलिए इस बात का खुलासा अभी बाकी है कि ये बेनामी सम्पत्तियां किसकी थीं, लेकिन जिस प्रकार कल्लू और नरोत्तम मिश्रा की मिलीभगत का सच सामने आया है, उसे देखते यह मानने में कोई पेंच नहीं कि ये तमाम सम्पत्तियां नरोत्तम की ही होंगी। कल्लू के बारे में यह भी बताया जाता है कि वह नरोत्तम के अलावा कुछ और मंत्रियों के लिए भी दलाली का काम करता आया है। सरकारी योजनाओं में कई प्रोजेक्टों में भी उसकी हिस्सेदारी बताई जाती है।

काले धनकुबेर, कमाए सैकड़ों करोड़ ...

मध्यप्रदेश मंत्रिमण्डल के भ्रष्टतम मंत्री नरोत्तम मिश्रा की गिनती उन काले धनकुबेरों में की जाती है, जिन्हें काले काम करते-करते खुद ही नहीं पता होगा कि उन्होंने कितने पैसे कमा लिए हैं। माना जाता है कि नरोत्तम मिश्रा ने अब तक सैकड़ों करोड़ रुपए धोखाधड़ी, फर्जीवाड़े, जालसाजी, घपले-घोटाले और घूस रिश्वतखोरी करके कमाए हैं। जालसाजी और फरेबी का एक मामला तो आयकर विभाग खुद सामने ला चुका है, जिसमें इस बात का खुलासा हुआ कि नरोत्तम मिश्रा ने अपने भ्रष्टतम करीबियों की आड़ में बेपनाह अघोषित काली सम्पत्ति में से 15 करोड़ रुपए खर्च करके भोपाल के सबसे महंगे इलाके में पौने पाँच एकड़ जमीन खरीदी है। सन् 2008 में यह जमीन तब खरीदी गई जब नरोत्तम मिश्रा नगरीय प्रशासन मंत्री थे। सनसनीखेज यह सच भी उभरकर सामने आया कि जमीन को खरीदने के लिए नरोत्तम मिश्रा ने जो रकम अपने खास के मार्फत अदा कराई, वह उन्हें एक ठेका मंजूर कराने की एवज में दक्षिण की एक नामी और मध्यप्रदेश में ठेकों के फर्जीवाड़े के लिए बहुचर्चित हैदराबाद की नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी ने बतौर कमीशन दी थी। मध्यप्रदेश में हजारों करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट चला रही नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी को मध्यप्रदेश में नेताओं और अधिकारियों से अनैतिक लेन-देन करके ठेकों में भारी भ्रष्टाचार करने के लिए जाना जाता है और जिस टेंडर की मंजूरी की एवज में मंत्री नरोत्तम मिश्रा को भ्रष्टाचार की

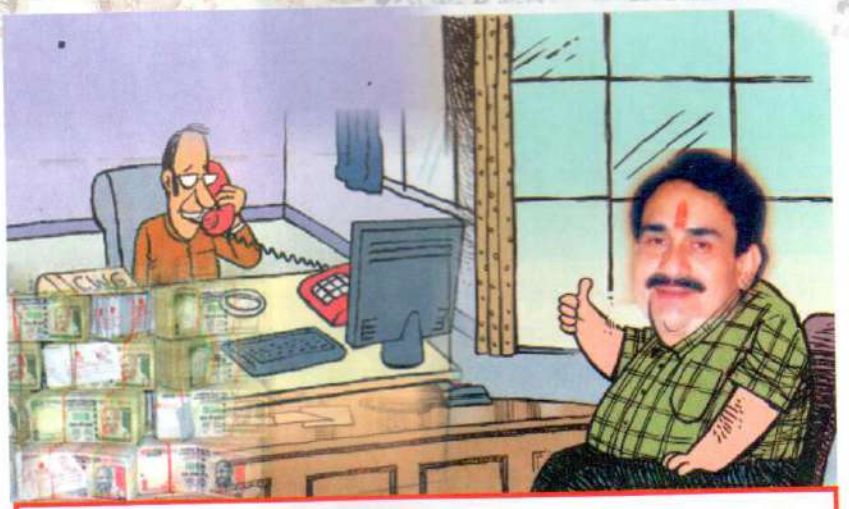

नरोत्तम मिश्रा के दलाल मुकेश शर्मा के यहां आयकर छापे में खुलासा हुआ कि नरोत्तम ने नगरीय प्रशासन मंत्री रहते हुए एक कंपनी को जो ठेका दिलवाया उसके कमीशन के तौर पर दी गई करोड़ो की राशि से भोपाल के पॉश इलाके की महंगी जमीन खरीदी गई थी। सन 2008 में मारे गए छापे में भ्रष्टाचार और आयकर चोरी के प्रामाणिक साक्ष्य मिलने के बावजूद नरोत्तम मिश्रा को जिस तरह से बख्शा जा रहा है, उससे आयकर विभाग की मंशा पर कई प्रश्नचिन्ह लग गए हैं। क्या आयकर विभाग के अधिकारी मामले को दबाना चाहते हैं

Name of the purchaser who received funds by DD/Cheques	DD/Cheque issued by (To the purchasers)	Amt of DD/Cheque issued (Rs.)	DD/Cheque No. and date	Issuing Bank & Branch	Source of funds for DD/Cheque in Bank a/c of Person issuing DD
Suresh Upadhyay	Ashok Agency	1600000	(2 DDs of 800000 each) DD-315772 & 315773 dt.16/06/08	Syndicate Bank,Manvata Nagar Indore	Cash deposit Rs. 16 Lac on 16/06/08
Do-	Sumeet Enterprises	900000	DD-586340 dt14/06/08	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Cash deposit on 04/06/08
Khemraj Singh Chouhan	Global Construction & Supplier	1600000	(2 DDs of 800000 each) DD-315770 & 315771 dt16/06/08	Syndicate Bank,Manvata Nagar Indore	Cash deposit Rs. 16 Lac on 16/06/08
Do-	Tirupati Traders	900000	DD 586342 dt 16/06/08	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Cash deposit on 04/06/08
Vijay Kumar Srivastava	Tirupati Traders	900000	DD-586359	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.2606500/- on 16/06/08
Do-	RP Traders	800000	DD-586350	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.4010000/- on 16/06/08
Do-	RR Enterprises	800000	DD-586356	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.3208000/- on 16/06/08
Chandra Kumar Sharma	Sumeet Enterprises	900000	DD-586345 dt16/06/08	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.2706750/- on 16/06/08
D0-	RP Traders	800000	DD-586351	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.4010000/- on 16/06/08
Do-	RR Enterprises	800000	DD-586355	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.3208000/- on 16/06/08
Pradeep Kumar	Sumeet Enterprises	900000	DD-586347	State Bank of Indore, Pardeshipura,Indore	Out of cash deposit of Rs.2706750/- on 16/06/08

बख्शीश मिली थी वह तत्कालीन महापौर सहित अधिकारियों और दलालों में भी बांटी गई थी। मंत्री नरोत्तम मिश्रा के काले कारनामों की तस्दीक 22 जुलाई, 2008 को नरोत्तम मिश्रा के खासमखास मुकेश शर्मा के घर पर मारे गए आयकर छापों में बरामद रतनपुर लैंड डील के कागजातों से हुई थी, इन कागजातों से यह सच निकलकर सामने आया कि इंदौर में नागार्जुन कम्पनी को जो ठेके मिले थे, भोपाल स्थित होशंगाबाद रोड इलाके के रतनपुर की बेशकीमती जमीन उसी ठेके के कमीशन की बतौर चुकाई गई थी। खास बात यह भी मालूम हुई कि पौने पांच एकड़ (206910 वर्गफुट) की इस खरीदी गई जमीन की रजिस्ट्री साढ़े पांच करोड़ रुपए में हुई लेकिन आयकर विभाग के मुताबिक लेनदेन सवा चौदह करोड रुपए से भी ज्यादा का हुआ। यह भी पता चला कि रतनपुर की इस जमीन खरीदी में दर्शाए गए तमाम नाम फर्जी हैं और जो नाम खरीददारों के दर्शाए गए, वो दर असल हैं ही नहीं। आयकर विभाग, भारत सरकार द्वारा विभाग के अपर संचालक (जांच) को दिनांक 31/08/2009 को भेजे गए एक गोपनीय प्रपत्र में जो विस्तृत जांच रिपोर्ट संलग्न थी, उसमें नेताओं (मंत्री नरोत्तम मिश्रा) व शासन के आला पदों पर काबिज अधिकारियों के विषय में कई महत्वपूर्ण सूचनाएं थीं, जिनके मुताबिक लेन-देन का भ्रष्ट खेल खेलकर मनचाहे ठेके हासिल करने वाली नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी ने रतनपुर जमीन खरीदी के लिए ही अपने खाते में से 9.57 करोड़ रुपए की रकम साइफन की थी और यह पैसे मंत्री नरोत्तम मिश्रा, नगरीय प्रशासन विभाग के तत्कालीन प्रमुख सचिव और अन्य अधिकारियों में कमीशन के रूप में बांटे गए। आयकर छापों में मिले कागजातों से यह भी जाहिर हुआ कि नरोत्तम मिश्रा सहित नगरीय प्रशासन विभाग के आला अधिकारियों के दलाल मुकेश शर्मा ने ऐसी सूझ-बूझ भरी कार्यप्रणाली अपनाई थी जिससे लेन-देन के ब्यौरे और लाभान्वितों के नामों को कोई समझ न सके। आयकर विभाग के अधिकारियों के लिए लेन-देन की तह तक पहुंचना वैसे तो शायद बहुत मुश्किल होता लेकिन सिलसिलेवार जांच और दस्तावेजों ने रहस्य की परतें खोलने में अहम भूमिका निभाई और भ्रष्ट मंत्री-नौकरशाहों, के एक नापाक षड्यंत्र का खुलासा हो सका। जांच में ऐसे कई सबूत भी मिले जिनसे उस तरीके के बारे में भी पता चला जिसका इस्तेमाल करके सरकारी पैसे को ठेकेदार के खाते में ट्रांसफर (साइफन) करके रतनपुर की बेशकीमती जमीन खरीदी गई। इनमें तत्कालीन नगरीय प्रशासन मंत्री नरोत्तम मिश्रा और उनके अधीनस्थ महकमे के प्रमुख

रजिस्ट्रियों का विवरण

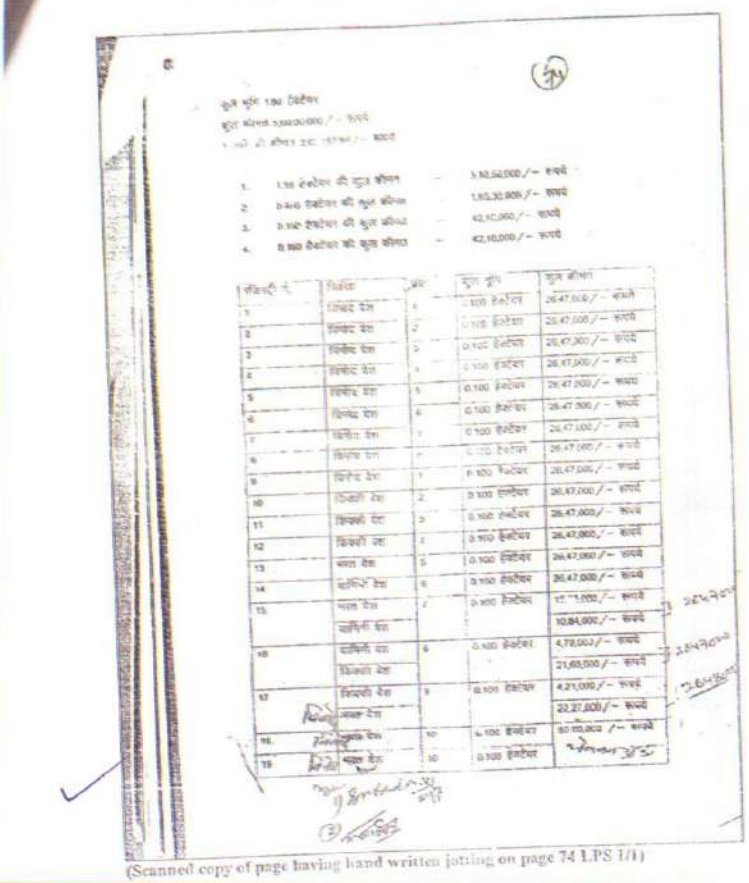

(Scanned copy of page having hand written jotting on page 74 LPS 1/1)

सचिव, आयुक्त, महापौर तथा नगर निगम के तत्कालीन आयुक्त को भ्रष्टाचार के बेपनाह कमीशन से नवाजा गया। आयकर छापे में मुकेश शर्मा के यहां से अलग-अलग रसीदें और नोटपेड भी मिले जिनसे यह प्रमाणित होता था कि तत्कालीन नगरीय प्रशासन मंत्री नरोत्तम मिश्रा और भ्रष्ट विभागीय अधिकारियों तथा महापौर को जो कमीशन मिला वह नागार्जुन कंस्ट्रक्शन को मिले किस ठेके की एवज में था और ठेके को किस प्रकार, किन-किन की मदद से नागार्जुन कम्पनी के पक्ष में मंजूर कराया गया। आयकर विभाग की जांच के नतीजों से जिन भ्रष्ट-दागदार चेहरों का खुलासा हुआ उनमें नरोत्तम मिश्रा के अलावा तत्कालीन प्रमुख सचिव (नगरीय प्रशासन) राघव चंद्रा, आयुक्त एस.एन. मिश्रा, तत्कालीन महापौर, नगर निगम इंदौर नीरज मंडलोई और एक्जीक्यूटिव इंजीनियर बी. जादौन शामिल थे। मुकेश शर्मा ने कूटभाषा का इस्तेमाल करते हुए कमीशनखोरों की जो कुंडली बनाई थी उसमें नरोत्तम मिश्रा को एम. प्रिंसीपल सेकेट्री राघव चंद्रा को पी, कमिश्नर एस.एन. मिश्रा को सी, मेयर नीरज मंडलोई को एम तथा एक्जीक्यूटिव इंजीनियर वी. जादौन को जे अक्षरों से दर्शाया था। इन लोगों को भारी कमीशन देने संबंधी रसीदें एवं दस्तावेज यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं कि प्रशासनिक अधिकारियों, नेताओं एवं मंत्री की सांठगांठ और कमीशनखोरी ही रतनपुर जमीन खरीदी की नींव बनी। जप्त दस्तावेजों के अनुसार सिम्पलेक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड से ली गई कमीशन की राशि रुपये 12.68 करोड़ और नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी से ली गई राशि रुपये 19.35 करोड़ थी।

प्रमुख बिन्दु -:

इस तरह निकाला फंड

1-जांच में पाया गया कि एनसीसी इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में एक जाना नाम है जिसे मध्यप्रदेश सरकार के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग से बड़े महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट प्राप्त हैं। कम्पनी का बैंक अकाउंट आईसीआईसीआई बैंक भोपाल में था जिस बारे में विस्तृत जांच की गई। बैंक का अकाउण्ट नम्बर 065505006246 था। जांच में पाया गया कि कम्पनी के खाते से समय-समय पर एकमुश्त राशि निकाली गई और खास तारीखों में उन कम्पनियों में डाली गई जिनके नाम और महत्वपूर्ण दस्तावेज छापामार कार्यवाही में मिले थे।

2- दिनांक 08/03/2008 से 19/04/2008 तक सम्पूर्ण राशि नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी के खाते में निकालकर इन कम्पनियों में डाल दी गई। आश्चर्यजनक बात यह सामने आई कि इन सारी कम्पनियों का नाम रतनपुर जमीन खरीदी मामले में भी आया था। ये कम्पनियां है:- अशोक एजेंसी, सुमीत एजेंसी, तिरुपति ट्रेडर्स, आरपीट्रेडर्स, आरआर इंटरप्राइजेस।

3- मोबाइल सेट मॉडल नं. ई-एसआई नोकिया (काला रंग) जिसे पंचनामे में दिनांक 21/07/2008 को मुकेश शर्मा के निवास से जप्त बताया गया।

मॉडल में पाया गया कि दिनांक

09/07/2008 को समय 09:09 रात्रि को एक मैसेज आया मोबाइल नम्बर-9329555112 से जो कि एक्जीक्यूटिव इंजीनियर जादौन का था कि -नागार्जुन को काम करने का सेंक्शन दे दिया है।

उक्त संदेश यह स्पष्ट दर्शाता है कि मुकेश शर्मा की सरकारी अधिकारियों से सांठ-गांठ थी जो कि सरकारी ठेकों को मेसर्स नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी को दिलवाने में दलाल की भूमिका निभाता था।

जप्त डायरी (स्लिप पेड) में जादौन एक्जीक्यूटिव इंजीनियर (ईई) को कमीशनखोरी व रिश्वतखोरी में लिप्त पाया गया। मुकेश शर्मा के ऑफिस से जप्त दस्तावेजों में भी स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित होता है कि कमीशन के काले खेल में मंत्री और सरकारी अधिकारियों की सांठ-गांठ है जिन्हें ठेके को दिलवाने का कुछ प्रतिशत कमीशन मेसर्स सिम्पलेक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड और मेसर्स नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी द्वारा दिया गया।

5- रायपुर इंदौर और जबलपुर में जब इन कम्पनियों विस्तृत जांच की गई तो पता चला कि कम्पनी के दफ्तर और कर्मचारियों के पते फर्जी हैं। जांच उपरोक्त रिपोर्ट में यह पाया गया कि रतनपुर जमीन खरीदी मामले में जो रकम नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कम्पनी ने बैंक से 08/03/2008 एवं 19/04/2008 के बीच निकाली वो दर असल एक सुनियोजित षडयंत्र के तहत किया गया। फर्जी पते और बिना पेन नम्बर के संचालित ये कम्पनियां दरअसल शासन के राजस्व को चूना लगाने के लिये दर्शाई गईं और रतनपुर जमीन खरीदी घोटाले की सुनियोजित साजिश के तहत थीं। सिर्फ दो कम्पनियों आरपी ट्रेडर्स एवं आरआर इंटरप्राईजेज ने अपना कारोबार 10 लाख के करीब दर्शाया, बाकी कम्पनियों ने तो इनकम टेक्स तक भरना नहीं दर्शाया।

जमीन खरीदी से संबंधित जब्त किए गए दस्तावेज

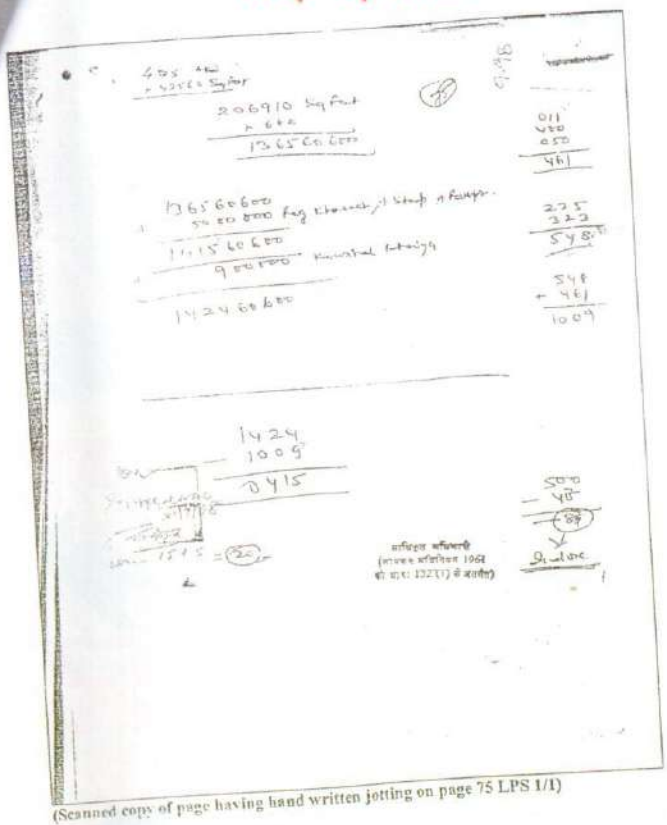

(Scanned copy of page having hand written jotting on page 75 LPS 1/I)

रजिस्ट्रियों का विवरण

The details of the purchase of land at Ratanpur, Misrod on 23/6/08 mentioned above is given below in the following chart –

S.No.	Name of the Purchasers	Amount of Registry (Rs.)	Stamp Duty (Rs.)	Stamp Paper fee (Rs.)	Other Fees (Rs.)	Khasra No./ Total area	Area sold
1	RC Parashar	2700000	239625	800	21775	556 / (1.180 Hectare)	0.100 Hectare
2	-do-	2595000	230310	280	20935	556 / (1.180 Hectare	0.080 Hectare